सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

▪ वर्ष : 15 ▪ ▪ अंक : 2 ▪ ▪ 5 मई 2018 ▪ ▪ मूल्य : 20रु. ▪

कटला मन्दिर जयपुर, प्रतिष्ठा महोत्सव

दशम् पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धा सुमन

जन्म : 21.9.1946

स्वर्गवास : 9.5.2008

श्री भंवरलालजी संकलेचा

सुपुत्र श्री धरमचन्दजी संकलेचा (रासोणी) मरूधर में पादरू

विनम्रता...आत्मीयता...दिव्यता...सौम्यता...स्नेह...सद्‌भाव... के धनी मानवीय गरिमा को उन्नत बनाने वाले, उच्च जीवन को आपने समग्रता एवं व्यापकता के साथ जीया तथा उसी सर्वश्रेष्ट एवं सर्वोतम को सबके साथ बांटा... संकलेचा परिवार आपकी स्मृतियों की अनमोल विरासत को हृदय की अंतरंग गहराई से संजोये हुये है। हम सब आपकी दिव्य आत्मा की शांति-समाधि की प्रार्थना करते है।

श्रद्धानवत :

धर्मपत्नी मोहिनी देवी

पुत्र-पुत्रवधु : ललितकुमार-ललितादेवी

राजकुमार-संगीतादेवी

कैलाशकुमार, गौतमचन्द-शिल्पादेवी

पौत्र-पौत्रवधु : मनीषकुमार-सौ. सोनू देवी

पौत्री-जंवाई : निकिताबाई-नवीनकुमारजी बाफना

पौत्र-पौत्री : मिशाल, रूचिका, काजोल, ईशीता

परदोहिता : प्रीत बाफना

फर्म :

नवनिधि इन्टरप्राईजेज

384, मिन्ट स्ट्रीट, ऑफिस नं. 29, दूसरा माला,
चैन्नई - 600079 फोन : 044-25291795

रूपम् कलेक्शन्स

15-8-485, फिलखाना, ओमश्री सांई कॉम्पलेक्स,
हैदराबाद फोन : 040-24612258

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

समया सव्वभूएसु सत्तुमित्तेसु वा जगे।
पाणाइवायविरई जावज्जीवाए

– दशवैकालिक 6/23

शत्रु हो या मित्र संसार के सभी जीवों के प्रति सम्भाव रखना और यावज्जीवन प्राणातिपाल की विरति करना अत्यंत कठिन कार्य है।

The Practise equanimity towards all the persons in the word. Whether a friend or an enemy. and to practise non-vioience towards all the living beings. throughout one's life is very difficult.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. सोलह सतीयाँ कथानाक भाग 3	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	05
3. सफल जीवन की बातें...	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	07
4. मजदूर के जुते	मुमुक्षु शुभम् लूंकड़, जोधपुर	12
5. समाचार दर्शन	संकलन	13
6. सम्मानीय संस्था संरक्षक सूचि		24
7. सम्माननीय संरक्षक सूचि		25
8. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	30

वांचना शिविर

सभी के लिये

वांचना शिविर

ता. 1 जून से 5 जून 2018 तक
बाड़मेर कुशल वाटिका में
आप सभी अवश्य पधारें।

निवेदक
अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद्
केयुप

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री मज्जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 15 अंक : 2 5 मई 2018 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

विज्ञापन हेतु हमारे प्रचार मंत्री
कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई
से संपर्क करावें।
मो. 094447 11097

नवप्रभात

गंभीरता जीवन का महत्वपूर्ण गुण है। सच तो यह है कि यह गुण ही व्यक्ति को जीने का आनंद देता है। इसके अभाव में व्यक्ति सुखी भले हो जाय, पर आनंदित नहीं हो सकता।

गंभीरता जीवन को कला देती है। उसे महान् बनाती है।

वर्तमान की एक सबसे बड़ी समस्या उच्छृंखलता है। उच्छृंखलता को ही व्यक्ति अपनी महानता व निडरता के रूप में परिभाषित करने लगा है। उसे उसके परिणामों की कोई चिंता नहीं है।

परिणाम कुछ भी हो... भले किसी और के हजार का नुकसान हो... उसकी कोई परवाह नहीं होती। उसे तो अपने पूर्वाग्रह की स्थापना से मतलब है। व्यक्ति दूसरों के हजार का नुकसान करने के लिये अपने हजार का नुकसान करके भी प्रसन्नता का अनुभव करता है।

यही कारण है कि व्यक्ति की अपनी भाषा व सोच पर से गंभीरता व विवेक का नियंत्रण समाप्त हो गया है।

कभी भी, कहीं भी, किसी के लिये भी, कुछ भी बोलने/लिखने में व्यक्ति को कोई संकोच का अनुभव नहीं होता।

न वह सत्यता की परीक्षा करता है, न सत्यता के साथ उसका कोई संबंध है।

वह अपनी पूर्वाग्रह-दृष्टि के आधार पर घटना को यथेच्छित स्वरूप कर शब्दों का छल उपस्थित करता है।

उसे बाद में जब सत्य का परिचय होता है, तब भी असत्य भाषण अथवा लेखन के लिये उसके चेहरे पर पश्चात्ताप की शिकन तक नहीं आती।

पश्चात्ताप की बात तो बहुत दूर, वह अपने असत्य अथवा अर्धसत्य को पूर्णसत्य सिद्ध करने के लिये तर्कों/कुतर्कों का सहारा लेना पसन्द करता है।

असल में उसे सत्यता का पहले से ही ख्याल होता है। केवल अपने पूर्वाग्रहयुक्त विचारों को फैलाना ही उसका एकमात्र लक्ष्य होता है।

उसकी दृष्टि में सत्य वह नहीं, जो है। बल्कि सत्य वह है, जो वह मानता है। अपनी सोच व समझ को सत्य व गंभीरता के अमृत से सिंचित करने में ही जीवन की सार्थकता है।

सोलह सतीयाँ
कथानक
4

विलक्षण वैराग्यवती सती सुन्दरी

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

(गतांक से आगे...)

भैया! जब मेरे ही अन्तराय कर्म का उदय था, तब भला इसमें तुम्हारा क्या दोष?

'बीती ताहि विसारि दे, आगे की ले सुध' जो होनी थी, हो गयी । अब बस शीघ्र ही मेरी भावना को सफल करो।

नगर सजा, घर सजा, महल और उद्यान सजे। महामहोत्सवपूर्वक सुन्दरी प्रभु के चरणों में सर्वात्मना समर्पित हो गयी और ज्येष्ठ भगिनी के सानिध्य में चारित्र के सोपान चढ़ने लगी।

और इधर एक दिन....

महाराज की जय हो, विजय हो। कहते हुए सुषेण सेनापति ने चक्रवर्ती सम्राट् का अभिवादन किया।

तुम्हारे माथे पर ये पसीने की बूँदें कैसी?

महाराज! आपकी कृपा से सब कुछ कुशल है पर चक्र रत्न आयुधशाला में प्रविष्ट नहीं हो रहा।

क्या? चक्र रत्न आयुधशाला में प्रविष्ट नहीं हो रहा?

हाँ चक्रीश्वर!

समस्त राजमुकुट हमारे चरणों में नत-प्रणत हो चुके, फिर यह व्यवधान कैसा?हमारी विश्व-विजय तो हो चुकी।

नहीं....नहीं महाराज! आप भूल कर रहे हैं?

कैसी भूल? भरत ने विस्मित हो प्रश्न पूछा।

महाराज! जब तक आपके 99 अनुज अलग-अलग राज्याधिपत्य लेकर बैठे हैं, तब तक दिग्विजय का यह डंका अधूरा ही समझिये।

तो फिर उन्हें शीघ्र ही सूचित किया जावे कि वे स्वतंत्र सम्राट्-पद को त्याग कर सामन्त राजा के रूप में अपनी अधीनता स्वीकार करें।

जो आज्ञा महाराज! आज ही चक्रीश्वर के दूत के साथ संदेश को भेज दिया जायेगा।

98 भाई अग्रज के आज्ञा-पत्र को सुनकर चकित हुए बिना न रहे। अरे! बड़े भैया को इतना बड़ा राज्य मिला है, विश्व विजेता बनकर भी उनकी भूख शान्त नहीं हुई, जो वे हमारे राज्यों पर भी अधिकार जमाना चाहते हैं?

पर हमारा भी स्वतंत्र अस्तित्व है। परतन्त्र होकर जीना भी कोई जीना है।

तो क्या हम समर-स्थली में आमने-सामने हो जाये?

नहीं....नहीं.... यह भी उचित नहीं है। भोग विजेता के पुत्र होकर यदि हम राजवैभव के लिये अग्रज से युद्ध करते हैं तो यह भी हमारी अधमता ही होगी।

98 भ्राता चल पड़े प्रभु ऋषभदेव की शरण में।

प्रभो! रास्ता दिखाइये। एक तरफ स्वतन्त्रता का हनन है तो दूसरी और इक्ष्वाकु कुल की महान् परम्परा को कलंकित करने वाली तुच्छता।

हम क्या करें ? जब हमें युद्ध और अधीनता, दोनों ही स्वीकार्य नहीं ।

वत्स! अपने साम्राज्य के स्वामी बनो। ऐसा सिंहासन हासिल करो, जिसे कोई हड़प न सके। आत्मा को पहचान कर सच्ची स्वतन्त्रता हेतु प्रयत्नशील बनो।

प्रभु से प्रतिबुद्ध हो 98 भ्राता दीक्षित हो दिव्य सिद्ध-पद के पथ पर चल पड़े।

यह सुनकर भरत अत्यन्त शर्मिन्दा हुए कि मैं प्रभु का कैसा अधम पुत्र, जो भाईयों के राज्य को हड़पने चला और वे कैसे महान् पुत्र, जो समस्त राज वैभव को ठोकर मारकर ठाकुर बनने चल पड़े।

इधर बाहुबली ने जब चक्रवर्ती सम्राट् की आज्ञा सुनी तो कुपित हुए बिना न रहा-मेरा बड़ा भाई होकर मुझ पर ही अधिकार जमाने चला है। इतनी विपुल सम्पदा और विशाल

साम्राज्य को पाकर भी उसकी प्यास नहीं बुझी, धिक्कार है उसकी तुच्छ मनोवृत्ति को।

नहीं....नहीं....महाराज! यह तो विश्व एकता का एकसूत्री कार्यक्रम है। सम्पूर्ण मानव जाति को सुख और शान्ति की समान छाँव मिले, इसलिये चक्रीश्वर का यह फरमान है। आप उन्हें गलत समझ रहे हैं।

ओहो....हो...हो...! विश्व शान्ति की स्थापना या हजारों बेकसूर मानवों को इच्छा की महावेदी पर होमने का बर्बर भर्त्सना योग्य कलंक।

लाखों लोगों के सिर पर तलवार चलाकर विश्व मैत्री की स्थापना का महान् मंत्र कोई चक्रीश्वर से ही सीखे।

महाराज! यदि आपने उनकी अधीनता स्वीकार न की तो युद्ध के सिवाय कोई विकल्प नहीं बचेगा।

जा....जा! कह देना अपने चक्रवर्ती से कि बाहुबली तुम्हारी खोखली धमकियों से डरने वाला नहीं। 98 भाईयों के राज्य को तलवार की धार पर हड़पने में उसकी कोई महानता नहीं। वह जब समर-आँगन में बाहुबली के क्षात्र तेज को देखेगा तब पता चलेगा कि मुकाबला क्या होता है। भरत को बाहुबली से इस प्रकार के व्यंग्य, कटाक्ष और धमकी भरे प्रत्युत्तर की जरा भी आशंका नहीं थी।

पर अब क्या करें?

एक तरफ भाई है, दूसरी ओर चक्रवर्तीत्व!

किसे छोड़े....किसे स्वीकार करें।

चक्रीश्वर भरत! आप यह क्या कह रहे हैं?बाहुबली भले ही स्वतन्त्र राज्य करें! पर इससे तो चक्रवर्तीत्व की सुदीर्घ यात्रा अधूरी ही कही जायेगी।

भले कही जाये। पर मैं अनुज के साथ रण-मैदान में उतर जाऊँ, यह कदापि सम्भव नहीं।

पर महाराज! यह अनादिकाल से चली आ रही दिव्य परम्परा का सरासर अपमान है। प्रश्न आपका नहीं, चक्रवर्ती पद की तौहीन का है।

दिग्विजय की अधूरी यात्रा का जब-जब इतिहास पन्नों पर अंकन होगा तब-तब इसे आश्चर्यकारी घटना के रूप में नहीं, लज्जास्पद घटना के रूप में अंकित किया जायेगा। अन्ततोगत्वा बाहुबली के विरूद्ध युद्ध का बिगुल फूंक दिया गया।

दोनों की सेनाएँ समर-क्षेत्र में आ खड़ी हुई। अश्व हिनहिना उठे। हाथी चिंघाड़ने लगे। रथ के पहियों में जैसे विद्युत्-तरंगें झंकृत हो उठी।

हजारों हजारों का हय-गय-रथ दल! एक तरफ अग्रज, दूसरी तरफ अनुज। दोनों महाप्रभु ऋषभ की संतान। लाखों की संख्या में प्रेक्षक। आँखों में भय, मन में आशंका और हृदय में उत्कंठा। नभमण्डल में उतर रहे थे सहस्र देव-विमान।

भरत और बाहुबली, दोनों ही चिंतन में थे।

रणभेरी बजी नहीं और संग्राम छिड़ा नहीं।

हजारों-लाखों निर्दोष प्राणियों का भूमि को रक्तदान! जब दो भाईयों की इच्छाओं से संघर्ष की चिंगारी फूटी है तो युद्ध भी उन दो में ही हो। भला क्यों हजारों माताओं को पुत्रविहीन, बहिनों को भ्राता-विहीन और पत्नियों को पतिविहीन किया जाये।

भरत बोला-बाहुबली! युद्ध जब हम दोनों के बीच है तो हजारों-लाखों बेकुसूरों का खून बहाने से क्या लाभ?क्यों न हम दोनों में ही मुकाबला हो जाये।

सम्राट्! मैं भी यही चाहता हूँ क्योंकि चक्रवर्ती पद की भूख तुझे है तो पाठ भी तुझे ही पढ़ाया जाये।

सैन्य समूह प्रेक्षक-वर्ग में बदल गया और अनुज-अग्रज दोनों रणभूमि में उतर आये।

सबसे पहले दृष्टि युद्ध हुआ और भरत हार गया। बाहुबली की सेना ने जयनाद से नभमण्डल को गूंजा दिया।

दण्ड युद्ध, बाहु युद्ध में क्रमशः मिली पराजय ने भरत के हौंसले पस्त कर दिये-अरे! चक्रवर्ती मैं हूँ या ये?चक्रवर्ती की आँखें निराश थी।

इतने में मुष्ठि युद्ध का प्रारम्भ हुआ। भरत ने पूरा दम लगाकर बाहुबली पर मुष्ठि प्रहार किया परंतु उसने पूरी ताकत लगाकर अपने आपको भूगर्भस्थ होने से बचा लिया।

बाहुबली मुझसे अधिक बलशाली है। कहीं ऐसा न हो कि इसके प्रहार से मेरा नामोनिशान ही न रहे। इस आतंक से भरत मन ही मन कांप उठा। जब कोई उपाय न सुझा तो प्राण बचाने के लिये उन्होंने बाहुबली पर चक्र चला दिया।

(क्रमशः)

सफल जीवन की बातें...
करेगी सुख की बरसातें

स्वभाव को दे सरसता
भाषा को दे मधुरता
चिन्तन को दे गंभीरता

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

स्वभाव को दे सरसता
भाषा को दे मधुरता
चिन्तन को दे गंभीरता

सज्जन का सत्संग, शांति के सतरंग

जीवन की सफलता का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटक है-सत्संग। सत् अर्थात् सत्य, साधना और संयम। इन तीनों के संग को सत्संग कहते हैं।

सत्संग का प्रभाव सर्वत्र दृष्टिगत होता है। बादल का पानी दूध में मिलकर मूल्यवान बन जाता है और सागर में जाकर कडवा व अपेय हो जाता है।

पारसमणि के सत्संग के माहात्म्य से लोहा सोना बन जाता है तथा कांच का मोती भी स्वर्णहार के मध्य कोहिनूर की भाँति चमकता है।

सत्संग से नर बनता नारायण, दानव बनता मानव और पशु बनता प्रभु। विश्वास न हो तो देखो उदाहरण इतिहास के। परमात्मा वीर के प्रभाव से चण्डकौशिक सर्प बना देव, डाकु बना संत वाल्मिकी, आर्द्रकुमार बना साधु, इन्द्रभूति गौतम बने प्रथम गणधर।

किसी ने खुबसूरत कहा है-

काजल तजे न श्यामता, मोती तजे न श्वेत।
दुर्जन तजे न दुष्टता, सज्जन तजे न हेत॥

तीन का सत्संग करे - स्वाध्याय - ग्रन्थ, सज्जन - व्यक्ति और साधु संत का।

चन्दन और चन्द्र से भी सत्संग शीतल है, जो तीर्थ स्वरूप साधुओं के सानिध्य से प्राप्त होता है। इस दुनिया में यदि शांति स्वरूप संत न होते तो द्वेष की आग में संसार जल जाता, गुरु तो दीप तुल्य है जो जीवन को रोशन करते हैं।

गुरु बिन ज्ञान न उपजे, गुरु बिन मिटे न भेद।
गुरु बिन संशय ना मिटे, भले पढ़ो चउ वेद॥
चलते फिरते तीर्थ जो, हरते सहु सन्ताप।
धन्य उसी का माथ है, जिस पर गुरु का हाथ॥

नियम लीजिये कि सत्संग छोडेंगे नहीं एवं कुसंग करेंगे नहीं। बुरी संगति से साहुकार भी चोर की भाँति दण्डनीय होता है।

(ii) रहो सदा नेक, रखो सदा विवेक

ज्ञानीजन चर्म-चक्षु से देखते जरूर हैं पर निर्णय तो विवेक-चक्षु से करते हैं। विवेक का अर्थ है- सही गलत को परखने की क्षमता। जब जीवन का तीसरा नेत्र रूप विवेक चक्षु उद्घाटित हो जाता है तो वह हंस दृष्टि प्राप्त कर लेता है।

हंस दूध और पानी को अलग कर देता है क्योंकि उसकी जीभ में एक आम्ल पदार्थ होता है। जो हंस हो, वह मोती चरे। बगुला बनना जीवन की सबसे बडी हार है।

एक रूपक बडा सुन्दर है। मानवों में एक बार भयंकर लडाई होने पर नारदाजी ब्रह्मा के पास पहुँचे और विवरण प्रस्तुत करते हुए उपाय का निवेदन किया। ब्रह्माजी ने मनुष्यों के हाथ-पाँव स्तंभित कर दिये। पर जब तक मन की कुटिलता न मिटे तब तक कैसे शांति की बंशी बजे?अब लोग दुष्ट-तुच्छ भाषा का प्रयोग करने लगे।

नारदजी के निवेदन पर ब्रह्मा ने मानवों की वचन-संपदा छीन ली। अब भी समाधान न हुआ क्योंकि वे आँखों से व्यंग्य, क्रोध और मान के तीर चलाने लगे।

इस बार नारदजी ने कहा कि मनुष्यों की आँखें फोड़ दो तब ब्रह्माजी ने कहा कि यह संभव नहीं क्योंकि इससे सृष्टि अस्त-व्यस्त हो जायेगी।

नारदजी ने कहा-तो फिर तीसरा नेत्र दे दीजिये। ब्रह्मा ने कहा-मैं तीसरा चक्षु पहले ही दे चुका हूँ जिसका नाम

है–विवेक।

कब, कहाँ, कैसे, क्यों, कितना खाना–पीना, देखना–बोलना–सुनना आदि इन सभी प्रश्नों का समुचित उत्तर विवेक में है।

भोजन मे अविवेक से अजीर्ण, तप में अविवेक से क्रोध, क्रिया में अविवेक से अहंकार आता है। अविवेक से ही सम्पन्न, बुद्धिमान होने पर भी रावण, दुर्योधन, कंस आदि दुर्गति के पात्र बने।

(iii) बने हमारी भाषा, प्रेम की परिभाषा

शब्द, शब्द ही नहीं है, वह सेतु भी बन सकता है और दीवार भी। वह ताला भी बन सकता है और चाबी भी।

शब्द घाव भी है और शब्द मरहम भी है।
शब्द गाली भी है और शब्द गीत भी है।
शब्द सन्नाटा भी है और शब्द संगीत भी है।

'अंधे का बेटा अंधा' इस वाक्य ने महाभारत की रचना की। तो सोचिये कि शब्द का तीर क्या–क्या नहीं कर सकता। कोयल न किसी को कुछ देती है, कौआ न किसी से कुछ लेता है, फिर भी एक प्रसन्नता का कारण और दूसरा निंदा का कारण बनता है। इसमे महत्त्वपूर्ण घटक भाषा ही तो है।

इस संसार में सर्वाधिक मधुर न द्राक्ष है, न ईक्षुरस है और न चीनी और मिष्ठान है। मधुर वचनों के साथ परोसी गयी घी बिना की रोटी भी परमानंद का अनुभव करवाती है जबकि कटु भाषा से दिया गया मधुर हलवा भी कडवा लगता है।

सारे संसार में नमक, नीम, करेले, मिर्ची आदि से भी हजारों–लाखों गुणा कटु, खारी और तीखी वाणी होती है।

हमारे शरीर में आँख, होंठ, कान, हाथ, पाँव, सब अंग–प्रत्यंग दो–दो हैं पर मुख एक है। इसका अर्थ है कि कम बोलना।

कम कहना सुनना अधिक, यह है परम विवेक।
इसलिये विधि ने दिये, दो कान मुँह एक।।

शल्य (कांटा) तो कुछ देर तक ही कष्ट देता है पर वाचा रूपी शल्य तो महाभयकारी होता है। वह भवोभव के लिये वैर–द्वेष–क्लेश का अनुबंध करवाता है।

वाणी–विवेक के सूत्रः

1. अंधे को अंधा, बहरे को बहरा, काणे को काणा आदि न कहना क्योंकि शस्त्रकारों ने अप्रिय सत्य बोलने का निषेध किया है।
2. किसी के कटु शब्द सुनने से हजारों वर्षो की तपस्या का फल मिलता है। कोई कटु बोले, तब सत्य हो तो खुद को बदलो और गलत हो तो चिन्ता न करो।
3. किसी की निंदा, बुराई, चुगली न करना।
4. भाषा व्यक्ति के व्यक्तित्व का प्रमाण है। लिखावट से पढाई का, स्वभाव से कुछ का बोध होता है, वैसे ही भाषा से व्यक्तित्व का ज्ञान होता है।
5. वचन तो रत्नों की दुकान है। जरूर हो, तभी खोलना, अन्यथा मौन की साधना से मुख–दुकान को मंगल रखना चाहिये।

याद रखना–

मधुर वचन है औषधि, कटु वचन है तीर।
श्रवण–द्वार से संचरे, साले सकल शरीर।।

इसके लिये परमात्मा वीर प्रदत्त भाषा समिति और वचन गुप्ति, इन दो उपायों को आजमाना चाहिये।

(iv) मुस्कानः खुशियों का (Glucon-D

Small life में Sweet Smile से बढ़कर कुछ भी तो नहीं।

सुख में मुस्कुराने वालों की कमी नहीं है पर जो दुःख में मुस्कुराते हैं, वे इतिहास के अमर दस्तावेज बन जाते हैं।

जीवन तो योगी की तरह जीना चाहिये जो वन में रहे या राजभवन में, जो छाया में चले या ताप में, मौन रहे या मुखर, भोजन करे या तप, हर समय सदाबहार मुस्कान उसके मुख पर तरंगित होती रहती हैं।

कार्यक्रमों से पाई गयी मुस्कान पल भर की होती है पर

अपने सदाचरण, संत-स्वभाव, संतोषी-जीवन, सौम्य-हृदय, मधुर-भाषा से पाया गया हँसी-खुशी का गुल-गुलजार न कभी मुरझाता है, न सूखता है।

इसके लिये चाहिये सकारात्मक चिन्तन की चाँदनी। नकारात्मक विचार नरक है और सकारात्मक भाव स्वर्ग है। पाँवों में जूते न हो तब दुःखी होने की बजाय विचार करो कि दुनिया में हजारों अपाहिज लोग भी हैं।

हमारे पास चश्मा नहीं है तो क्या हुआ, जब कि लाखों व्यक्तियों के पास रोशनी के दो नयन-दीपक भी नहीं हैं।

सूर्योदय के साथ यही मंत्र मन में धारण करना है-कैसी भी स्थिति-परिस्थिति हो, मैं सुखीराम ही बनूंगा। हजारों विपदाओं की आंधियों में भी मेरी चेतना में विश्वास की मशाल उजाला करती रहेगी।

ये चार पंक्तियाँ कितनी प्यारी हैं-

जिन्दगी पथ है, मंजिल की तरफ बढ जाने का
जिन्दगी गीत है, मस्ती भरकर गाने का।
असफलता पर निराश होना बुजदिली है,
जिन्दगी नाम है, तूफानों से टकराने का।।

जीवन में मुस्कान का उद्यान खिलाईये। किसी को फूलों का हार न दे सको तो भी कोई शिकायत नहीं पर हमेशा मुस्कान का अनूठा-मीठा रस होंठो पर सजाकर रखिये फिर बताइये ये कि कौन आपका मित्र नहीं बनता, अपना नहीं होता।

मुस्कुराईये जरूर, पर किसी की गलतियों पर नहीं।

(v) स्वर्ण और स्वर्ग से भी सुन्दर बने स्वभाव

भाव, प्रभाव और स्वभाव। भाव होता है सामान्य, प्रभाव होता है विशेष पर स्वभाव होता है अद्भुत, अनुपम और अप्रतिम।

स्वभाव से सफलता-विफलता का वास्ता है। सुन्दर रंग कुछ समय के लिये आकर्षित करता है, विराट् सन्पदा कुछ दिनों के लिये प्रभावित करती है पर मधुर, निर्मल, पवित्र, अहिंसक और परोपकारी स्वभाव सदा के लिये आकर्षण, प्रभाव और अपनत्व का कारण बनता है।

हम 365 दिनों तक सौन्दर्य को निखारने का प्रयास करते हैं पर मन को सजाना-सवांरना भूल जाते हैं।

यदि स्वभाव का मूल्य न होता आज भगवान महावीर, श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि पूजनीया न होते।

ज्यादा दहेज या कम दहेज लाने से बहुरानी की इज्जत में फर्क नहीं आता, ज्यादा कमाने या कम कमाने से पुत्र योग्य-अयोग्य नहीं होते। मूल में सच्चे व अच्छे स्वभाव से ही लोग प्रेम, स्नेह और शांति को पाते हैं।

सुन्दर स्वभाव के रोचक Tips

1. अहंकारी नहीं, विनम्र बनना। अहंकार करने वाला फूलता है और जो फूलता है, वह फटता है। फलीभूत होने के लिये विनम्रता का ग्रीस जीवन के यंत्र में लगाते रहो।
2. कभी भी किसी के साथ दुष्टता, मायाचार और तुच्छता का व्यवहार न करो।
3. बुरे के साथ बुरा बनना बचपना है। बुरे के साथ अच्छा बनो एवं उसके प्रति बदले की नहीं, उसे बदलने की भावना रखो।
4. पद के मद का कद छोटा होता है। पद, पैसा व प्रतिष्ठा पाकर उपकारी, सहयोगी और प्रभु व गुरु को न भूले।
5. न्याय-पथ का अतिक्रमण न करो। ईमानदारी के चने बेईमानी के काजू से हजारों गुणा अच्छे होते हैं। निंदा व निर्धनता में भी धीर-गंभीर व्यक्ति निर्मलता बनाये रखते हैं।
6. परहित में सदैव तत्पर रहो पर प्रतिफल की कांक्षा न करो, जैसे बादल और वृक्ष। कहा भी गया। है-

   परहित सरिख धर्म नहिं भाई।
   परपीडा सम नहिं अधमाई।।
7. लोगों की नाराजगी की चिन्ता न करो। बुरे का डटकर प्रतिकार करोगे तो जटायु की तरह अमर हो जाओगे अन्यथा मौनी का समर्थन भी अनर्थ का ही कारण बनेगा। आज पाप-वर्धन का कारण पापियों की वाचालता ही नहीं, धर्मियों की मूकता भी है।

साहित्यकारों ने दिल को छू लेने वाली बबात कही है-

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध।
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध॥

8. 'अमृतम् रसायनम् ज्ञानम्' ज्ञानार्जन के लिये सत्साहित्य का नियमित वाचन करे। इससे आत्मा के सुसंस्कारों का जागरण, पोषण, वर्धन और संरक्षण होगा।
9. पाप के प्रति घृणा रखे। पापी को बदलने का पुण्यार्थ करे। पाप-त्याग में आनंद का अहसास करें। याद रखें।

पाप छुपाये ना छिपे, छिपे तो मोटे भाग।
दाबी दुबी ना रहे, रुई लपेटी आग॥

10. विवेक को ताक पर रखकर किसी की भी मजाक न करे। आटे में चुटकी भर नमक डाला जाता है, न की मुट्ठी भर।

मसकरी दस दिनकरी, ज्यादा करी तो बीस।
तीस दिनों की मसकरी, कटा देती है सीस॥

11. संतोष को जीवन का सच्चा सुख माने। मम्मण के पास महावैभव होने पर भी वह दु:खी था पर संतोषी पूणिया श्रावक सदैव आत्मिक सुख का रसास्वाद करता था। संतोषी में दु:ख, उत्सुकता, शोक, भय, दीनता के विचार होते ही नहीं है।

न किसी के प्रभाव में जीयो।
न किसी के अभाव में जीयो,
यह जीवन आपका अपना है,
आप अपने स्वभाव में जीयो।

12. क्रोध कभी न करो। यह दिल से दिमाग तक हर अंग को कमजोर कर देता है। क्रोधी को क्षमा का उपहार दो, ताकि उसे परिवर्तन का अवसर मिले।

गुणी बनने के साथ, गुणानुरागी भी बने

गुणी बनना सरल है पर गुणारागी बनना विरल है। गुणों के बाग में यदि गुण-अनुराग, गुण-अनुवाद और गुण-स्वाद का गुण-पुष्प न खिले तो समझना चाहिये कि वह गुणी बिना मधुरता का रस गुल्ला है। शास्त्रों में कहा गया-

गुणरयणमण्डियाणं, बहुमाणं जो करेड़ सुद्दमणो।
सुलहा अन्नजम्मम्मि तस्स गुणा होंति नियमेण॥

जो गुणीजनों की नि:स्वार्थ-निर्मल मन से बहुमान, अभिनंदन और प्रशंसा करता है, वे गुण यदि उन्हें प्राप्त नहीं है, तो अगले जन्म मे उसे सुलभतया प्राप्त हो जाते हैं।

गुणों की प्रशंसा न कर पाने का एक मात्र कारण है-ईर्ष्या।

यह ईर्ष्या ही जलन-कुढन की आग में परिवर्तित होकर गुणों के बाग को राख कर देती है। ईर्ष्या के कारण स्वाध्यायी मुनि पीठ-महावपीठ भी अगले भव में स्त्री अवतार को प्राप्त हो गये।

अपने स्वभाव से श्री कृष्ण बनो, न कि कंस॥
अपने जीवन में युधिष्ठिर बनो, न कि दुर्योधन।

मिष्ठान छोडकर विष्ठा में मन को दे, वह सुअर। निर्मल सरिता के शुद्ध नीर को छोडकर गंदी नाली में चोंच दे, वह कौआ, वैसे दूसरों के गुणों को छोड़कर उनके दोषो को रटे, वह पापी, अधर्मी और अधम प्राणी।

हकीकत में व्यक्ति जिन कमियों को दूसरों में देखता है, वे सारे दुर्गुण उसमें भरे पड़े हैं।

एक व्यक्ति को ऐसा आईना मिला, जो दूसरों के सामने रखने पर उनके दोषों को प्रकट कर देता।

अब वह अहंकारी बनकर सभी के दोष देखता और उनका प्रचार करता।

जब संत के पास गया तो संत ने कहा कि भैया यह दर्पण अपने मन के सामने करो। ऐसा करते ही वह व्यक्ति डर गया, शर्मसार हो गया क्योंकि उसमें दूसरो की अपेक्षा हजारों गुणा दोष भरे हुए थे।

बुरा देखन जो चला, बुरा मिला न कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय॥

गुणों के कारण ही हंस-बगुले का, कोयल-कौवे का भेद होता है अन्यथा बाह्य आकृति से तो पण्डित भी धोखा

खा जाते है।

दोष पराया देखी करी, चलते हसंत हसंत।
अपनी याद न आवई, जा को आदि न अन्त॥

(vii) लक्ष्मी पुत्र बनने से पहले सरस्वती पुत्रा बनो..

आचार्य श्री जिनलाभसूरि द्वारा लिखित आत्म-प्रबोध ग्रन्थ का एक कथानक अतीव प्रेरणास्पद है।

एक व्यक्ति गरीबी के कारण अत्यन्त लाचार था। अन्ततोगत्वा वह एक देवी के ध्यान में निमग्र बना। देवी ने उस पर तुष्ट होकर कहा-वत्स! मैं तुम्हारी साधना से प्रभावित हूँ। बताओ, तुम्हें कामकुंभ को सिद्ध करने वाली विद्या का वरदान दूं अथवा कामकुंभ।

आलसी मानसिकता से उस भक्त ने कहा-देवी! आप मुझे कामकुम्भ प्रदान करें।

वह देवी तथास्तु कहकर अन्तर्धान हो गयी। कामकुंभ के दिव्य प्रभाव से गरीब अल्पावधि में ही धनवान बन गया। स्वजन एवं परिजन यह चमत्कार देखकर उसके पास पहुँचे और अमीरी का कारण पूछने लगे। देवी द्वारा प्रदत्त कामकुंभ का वृतान्त जानकर वे लोग कामकुम्भ-दर्शन के लिये उत्सुक बने।

अत्यन्त अहंकार, उत्साह, उमंग से भरकर वह भक्त कामकुम्भ को सिर पर रखकर नर्तन करने लगा। इस समय उसके सिर पर रखा हुआ कामकुम्भ भूमि पर गिरा और उसी समय कामकुम्भ से प्राप्त सारी सम्पत्ति लुप्त हो गयी। धनवान पुन: निर्धनता के शाप से ग्रस्त हो गया।

प्रस्तुत कथानक का स्पष्ट तात्पयार्थ यही है कि पदार्थ से विद्या हासिल नहीं हो सकती पर विद्या से मनोवांछित पदार्थ को पुन: पुन: प्राप्त किया जा सकता है।

शास्त्रों में कहा गया-'विद्या गुरूणां गुरु:' विद्या तो गुरुजनों की भी गुरु है।

विद्यार्जन के लिये मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम वशिष्ठ के चरणों में नत हुए। श्री कृष्ण ने गुरु सांदीपनी के चरणों की सेवा की। कुमारपाल राजा श्री हेमचन्द्राचार्य के भक्त बने।

विद्या व्यक्ति का संरक्षण करती है जबकि धन का रक्षण आदमी को स्वयमेव करना पडता है।

विद्या को न चोर चुरा सकता है, न राजा हरण कर सकता है। न भ्राता बंटवारा कर सकते हैं, न उसका कोई भार होता है। समस्त धनों में प्रधान विद्या-धन व्यय से लगातार बढता रहता है।

भाग्य-क्षय पर भी जो अक्षय रहे, यश, सुख, शान्ति, सम्मान देने वाली एक मात्र विद्या ही है।

अन्नदान से महान् अक्षर-दान है, जो जीवन भर प्रेम, समझ, विवेक और सदाचार का उजाला बांटता है।

अन्नदान है जीवन दान, पर अक्षर-दान है, जीवन-निर्माण। आईये! विद्या की नींव पर जीवन मंदिर की प्रतिष्ठा करें।

(viii) निराशा की निशा... आशा का दीपक

दु:ख जीवन का मरुधर है, तो सुख जीवन का मधुमास है।

जीवन यात्रा में उतार-चढाव, धूप-छाँव और सुख-दु:ख के पडाव हैं। जैसे मधुरता के बिना मिठाई का, प्यास के बिना पानी का एवं श्रम के बिना विश्राम का मूल्य समझ में नहीं आता, वैसे ही दु:ख के बिना सुख का स्वाद प्राप्त नहीं होता।

याद रखना-हर रात के बाद प्रभात है, अमावस के बाद पूर्णिमा है। दु:ख आये तब स्वागत करो क्योंकि वह तुम्हें उसी तरह परखने आया है जैसे आग पर सोने की परीक्षा होती है। किसी कवि ने कहा है-

गम की अंधेरी रात में,
तूं दिल को बेकरार न कर।
सुबह होगी जरूर,
तूं सुबह का इन्तजार कर।

यदि तुम्हें तीर्थंकरों, गणधरों एवं महापुरुषों की भाँति कलात्मक जीवन जीना है तो कष्ट की कसौटी का कुन्दन बनना होगा।

एक
प्रेरक कथा

मजदूर के जुते

संकलन – मुमुक्षु शुभम् लूंकड़, जोधपुर

एक बार एक अमीर आदमी अपने बेटे के साथ कहीं जा रहा था। तभी उन्हें रास्ते में एक जोड़ी पुराने जूते दिखे, जो संभवत: पास के खेत में काम कर रहे गरीब मजदूर के थे। मजदूर काम खत्म करके घर लौटने की तैयारी कर रहा था। तभी बेटे ने अमीर पिता से कहा कि पिताजी, क्यों ना इन जूतों को छिपा दें, मजदूर को परेशान देखकर बड़ा मजा आएगा।

आदमी ने गंभीर होकर कहा कि किसी का मजाक उड़ाना सही नहीं है। इसके बजाय क्यों ना हम इन जूतों में कुछ सिक्के डाल दें और देखें कि मजदूर पर क्या प्रभाव पड़ता है।

बेटे ने वैसा ही किया और फिर पिता-बेटे छिपकर मजदूर को देखने लगे। काम खत्म करके आए मजदूर ने जब जूते पहने तो उसे किसी कठोर चीज का आभास हुआ।

उसने जूतों को पलटा तो उनमें से सिक्के निकल आए।

मजदूर ने इधर-उधर देखा, जब उसे कोई नजर नहीं आया तो उसने सिक्के जेब में डाल लिए और बोला कि हे भगवान, उस अनजान सहायक का धन्यवाद जिसने मुझे यह सिक्के दिए। उसके कारण आज मेरे परिवार को खाना मिल सकेगा।

मजदूर की बातें सुनकर बेटे की आंखें भर आई और वह अपने पिता से बोला कि सच है लेने की अपेक्षा देना कहीं अधिक आनंददायी होता है।

किसी को कोई खुशी देने से बढ़कर और कोई सुख नहीं होता।

प्रियंका (करिश्मा) बोथरा के करिश्में ने बढाया गौरव

बाड़मेर शहर के आजाद चौक के मूल निवासी वर्तमान में पावरलूम नगरी ईरोड़ (तामिलनाडू) रहने वाले श्री अशोक कुमार बोथरा व श्रीमती जयमाला बोथरा की होनहार प्रतिभावान बेटी प्रियंका (करिश्मा) बोथरा ने संपूर्ण जैन समाज ही नहीं अपितु परिवार व जिले का नाम रोशन किया हैं।

संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की ओर से आयोजित सिविल सर्विस परीक्षा 2017 के परिणाम में प्रियंका का 106 वीं रैंक पर चयन हुआ हैं। दो भाईयों की इकलौती बहन प्रियंका ने फोन पर बताया कि जब वो ग्यारहवीं कक्षा में थी तो एक बार पापा ने कहा कि बेटी तुझे कलक्टर बनना हैं और वह पिता के इस सपने को साकार करने में जुट गई। उन्होंने बताया कि उनके परिवार में सात पीढ़ियों में कोई सरकारी कर्मचारी नहीं बना और उसने आईएएस बनकर यह सपना साकार कर दिखाया। 24 साल की उम्र में आईएएस में चयनित प्रियंका बोथरा दूसरी बार परीक्षा देकर सफल हुई हैं। प्रियंका की स्कूल की पढ़ाई ईरोड़ और कॉलेज की पढ़ाई मुंबई में हुई। आईएएस की तैयारी दिल्ली में की। प्रियंका ने कहा कि वो चाहती हैं कि बाड़मेर की बेटियां उसकी तरह अपने सपनों को साकार कर आईएएस, आईपीएस और आरएएस बने।

प्रियंका बोथरा का परिवार तीस साल से ईरोड़ में हैं, लेकिन बाड़मेर से उनका नाता जुड़ा हुआ हैं। उनकी दादी व बड़े पापा का परिवार यहीं रहता हैं। प्रियंका के पिताजी व्यवसायी हैं। इनके बड़े पापा श्री लूणकरण बोथरा नगर परिषद् बाड़मेर के सभापति हैं। प्रियंका बोथरा के आईएएस में चयन होने पर परिजनों, शुभचिन्तकों व जहाज मन्दिर परिवार की और से बधाईयां देकर खुशी जाहिर की हैं।

समाचार दर्शन

एशिया की सबसे बड़ी कॉलोनी में गूंजा ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रियंतां प्रियंतां का मंत्र

श्रीमती चन्द्रकला पटवा, जयपुर

राज7स्थान की राजधानी गुलाबी नगरी जयपुर में 8 अप्रेल को पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति पुण्य प्रभावी आचार्य श्री जिन मणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. पूज्य गणी मणिरत्नसागरजी म. मुनि मलयप्रभसागरजी म. आदि मुनि मंडल तथा प्रवर्तिनी सज्जनमणि श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि साधु साध्वी वृंद के मंगल प्रवेश के साथ महोत्सवों का महारंभ हुआ। इस महोत्सव श्रृंखला का समापन हुआ मानसरोवर प्रतिष्ठा महोत्सव से।

मानसरोवर यह एशिया खण्ड की सबसे विशाल कॉलोनी है। यहाँ जैनों के लगभग 800-900 घरों की बस्ती होने के बाद भी शिखरबद्ध जिनमन्दिर एवं दादावाड़ी का अभाव था।

आज से 22-23 वर्ष पूर्व जब बंगदेशोद्धारिका प.पू. प्रवर्तिनी शशिप्रभा श्रीजी म.सा. वर्षो बाद पुनः जयपुर पधारे। तब उनकी पावन प्रेरणा से दिल्ली निवासी श्री मनीषजी महेन्द्रजी भंसाली द्वारा दादावाड़ी निर्माण हेतु भूमि अर्पण की गई। अनेक समस्याओं के कारण तब कार्य आगे नहीं बढ पाया। पूज्यवर्या श्री की पुनः पुनः प्रेरणा से संघ का उत्साह बढा एवं यह कार्य पूर्णता के शिखर पर आरूढ हुआ। दादावाडी पूर्णता का आकार ले चुकी है एवं जिनालय भी शीघ्र ही संपूर्णता को प्राप्त करेगा ऐसा विश्वास है।

दादावाडी के निर्माण में विविध धार्मिक संस्थाओं, स्थानीय संघों एवं दानदाताओं से उदार हृदय से सहयोग मिला।

त्रिदिवसिय प्रतिष्ठा महोत्सव में जनमेदिनी का अप्रतिम उत्साह रहा, प्रथम दिन कुंभ स्थापना, दीपक स्थापना, नवग्रहपूजन, दश दिक्पाल पूजन, अष्टमंगल पूजन आदि विधान यशवंतजी गोलेछा द्वारा करवाए गए। इसी के साथ 18 अभिषेक का आयोजन भी 21 अप्रैल को हुआ। दूसरे दिन गच्छाधिपति प.पू. जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

अतिप्राचीन महाचमत्कारी

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ

के शास्त्र शुद्ध जीर्णोद्धार में लाभ लीजिये

पूज्य आचार्यश्री की प्रेरणा से मूलनायक परमात्मा का उत्थापन किये बिना शास्त्रशुद्ध जीर्णोद्धार हो रहा है। नूतन मंदिर निर्माण से जीर्णोद्धार में आठ गुणा फल शास्त्रकार भगवंतों ने बताया है। यह जीर्णोद्धार तो आचार्य भगवंत श्री सिद्धसेनदिवाकर द्वारा कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना द्वारा शिवलिंग में से प्रकट हुए एक अतिप्राचीन महा प्रभावशाली तीर्थ का हो रहा है। जीर्णोद्धार कार्य तीव्र गति से चल रहा है। इसमें आपके सहयोग की अपेक्षा है

1,11,111.00 की राशि अर्पण कर जीर्णोद्धार सहभागी के रूप में संगमरमर की पट्टिका में अपने परिवार के दो नाम अंकित करवाकर महान् पुण्य लाभ प्राप्त करें।

संपर्क सूत्र

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ जैन श्वे. मारवाड़ी मूर्तिपूजक समाज ट्रस्ट

श्री अवंति पार्श्वनाथ चौक, दानी गेट, पो. उज्जैन-456 006 म. प्र.

फोन : (0734) 2555553 / 2585854

अध्यक्ष - हीरालाल छाजेड़-94068 50603, सचिव-चन्द्रशेखर डागा-94250 91340

जीर्णोद्धार समिति अध्यक्ष : पुखराज चौपड़ा-94251 95874

बैंक खाता - बैंक ऑफ बड़ौदा, उज्जैन (खाता नं. 05050100007820 / IFSC CODE-BARBOUJJAIN)

भारतीय स्टेट बैंक, उज्जैन (खाता नं. 63041232720 / IFSC - SBIN0030062)

के पुण्य प्रभाव से प्रात: 8.30 से लेकर 1.30 बजे तक अनवरत 'जय गुरुदेव' की जयकार से सम्पूर्ण समारोह गुंजायमान हो गया।

बाहर से भी अनेक गुरुभक्तों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

इस मंगल अवसर पर खरतरगच्छ युवा परिषद जयपुर शाखा का शपथ ग्रहण समारोह चतुर्विध संघ की साक्षी में हुआ। अ.भा. के.युप. के अध्यक्ष रतनजी बोथरा दिल्ली, एवं अ.भा. खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा के अध्यक्ष श्री मोतीचंदजी झाबक (रायपुर) वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री विजयराजजी डोसी (बैंगलोर), महामंत्री संतोषजी गोलेछा (रायपुर) ने उपस्थिति देकर संघ का उत्साह बढाया।

धर्मसभा में जन प्रतिबोध देते हुए पुण्यसम्राट् गुरुदेव श्री ने संघरत्ना प.पू. शशिप्रभा श्रीजी म.सा. को शासन कार्यों के लिए बधाई एवं साधुवाद किया। आपश्री ने अत्यन्त उदार हृदय से खरतरगच्छ के साध्वी समुदाय द्वारा हो रही शासन प्रभावना की अनुमोदना की। मानसरोवर संघ को भी आपश्री ने शीघ्रातिशीघ्र जिन मन्दिर पूर्ण कर प्रतिष्ठा करने का निर्देश दिया।

इस कार्य में तन-मन-धन से सहयोग देने हेतु महेशजी महमवाल एवं चन्द्रकलाजी पटवा की विशेष अनुमोदना की गई।

बालमुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. के दीक्षा दिवस ने इस प्रसंग को संयममय बना दिया। साध्वी मण्डल एवं श्री संघ द्वारा उनके लिए मंगल भावनाएं की गई।

दादावाडी में मूलनायक जिनकुशलसूरि गुरुदेव की प्रतिमा भराने व बिराजमान करने का लाभ श्रीयुत सोभागमलजी श्रीमती शांतादवी लोढ़ा, परिवार टोंक वालों ने लिया।

दादा श्री जिनदत्तसूरि का लाभ श्री उग्रसेनजी, हुकमचंदजी, ज्ञानजी संकलेचा, मालपुरा वालों ने तथा दादा मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि का लाभ श्री एम के जैन परिवार जयपुर वालों ने लिया।

दादा श्री जिनचन्द्रसूरि का लाभ पूज्य गणी श्री मणिरत्नसागरजी म. के शिष्य पूज्य मुनि श्री मेरूरत्नसागरजी म. के गृहस्थ परिवार मोहनलालजी किशोर कुमारजी बोथरा, बाडमेर ने लिया।

वार्षिक ध्वजा का लाभ कंचनदेवी अमरचंदजी जैन ने, मुख्य कलश सुरेन्द्रजी रामपुरिया ने तथा गुरु पूजन का लाभ पारसजी अशोकजी गांधी ने लिया। कामली का लाभ राजेन्द्रजी संचेती व अनूपजी पारख परिवार ने लिया।

फार्म - 4 (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशक स्थान	-	माण्डवला, जिला जालोर (राज.)
2. प्रकाशन अवधि	-	मासिक
3. मुद्रक का नाम	-	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	-	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	-	नहीं
पता	-	जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
4. प्रकाशक का नाम	-	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	-	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	-	नहीं
पता	-	जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
5. सम्पादक का नाम	-	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	-	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	-	नहीं
पता	-	जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
6. उनके नाम व पते जो समाचार पत्रों के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के 1% से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।		श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला, जिला-जालौर (राज.)

मैं डॉ. यू. सी. जैन, जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर (राज.) द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

डॉ. यू. सी. जैन

दिनांक : 5.5.2018

प्रकाशक के हस्ताक्षर

सपना हुआ साकार मन्दिर को मिला आकार

कटला मन्दिर प्रतिष्ठा...एक अविस्मरणीय आयोजन

महावीर डागा–जयपुर

अखिल विश्व में गुलाबी नगरी के नाम से प्रसिद्ध राजस्थान की हृदयस्थली जयपुर... जिनशासन प्रेमियों की विशेष साधनास्थली रही है। इसी रत्नप्रसूता भूमि की एक दिव्यरत्न है 'आगमज्योति प.पू. प्रवर्त्तिनी श्री सज्जन श्रीजी म.सा.! आज वह रत्न तो विलीन हो गया, पर उनकी कृतियों की आभा इस वसुधा को आज भी आलोकित कर रही है।

उसी आलोक का ऊर्जा उत्सव अर्थात् कटला मन्दिर अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव! वैशाख मास की पतझड़ को इस उत्सव ने मानो सावन की रिम झिम में परिवर्तित कर दिया। सम्पूर्ण पृथ्वी को धर्म से शस्य शामला सुजला सुफला कर दिया।

इस प्रतिष्ठा महोत्सव के निमित्त शासन सम्राट् पुण्य प्रभावी, सहजता, सरलता के सुमेरू पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. का अपने शासन प्रभावक प.पू. मनितप्रभसागरजी म., प.पू. समयप्रभसागरजी म., पू. विरक्तप्रभसागरजी म., पू. श्रेयांसप्रभसागरजी म., पू. मलयप्रभसागरजी म. आदि मुनि मण्डल तथा संघ हित चिन्तिका प.पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा., प.पू. दिव्यदर्शना श्रीजी म. पू. सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. आदि साध्वी मण्डल तथा प.पू. सुरेखा श्रीजी म.सा. आदि आर्यामण्डली के साथ 8 अप्रैल को मंगलमय प्रवेश शिवजीराम भवन जौहरी बाजार में हुआ। 17 वर्ष बाद गुरुदेवजी के आगमन को मात्र जैन समाज ने ही नहीं अपितु सकल आर्य समाज सह प्रकृति ने भी वर्धापना की।

रामलीला मैदान से प्रारंभ होकर शोभायात्रा हजारों भक्त समुदाय के साथ जौहरी बाजार पहुँचा। इस अवसर पर विविध जैन संघों के प्रमुखों के साथ गुर्जर, सिख, माहेश्वरी, आदि विविध समुदायों के प्रमुख एवं अनेक प्रशासन अधिकारी भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर प्रतिष्ठा की पत्रिका का भी लोकार्पण हुआ। पूज्य आचार्य श्री ने सभी को एकसूत्र में बंधने का संदेश दिया। साध्वी मण्डल एवं श्री संघ ने गुरुदेव श्री के आगमन पर अपने मनोभाव अभिव्यक्त किए।

इस प्रवेशोत्सव ने एक उत्सव-श्रृंखला का रूप लिया। 9 अप्रैल को जवाहरनगर संघ में गच्छाधिपति गुरुदेव श्री का प्रवेश एवं प्रवचन हुआ।

10 अप्रैल को आचार्य श्री के भक्त प्रतिष्ठित श्रावक कुसुमदेवी मुन्नीलालजी डागा परिवार के गृहांगण में पूज्य गुरुदेव एवं गुरुवर्या श्री का पदार्पण हुआ। भव्यरूप से दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

11 अप्रैल को खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष प्रकाशजी लोढा एवं अन्य घरों में पगले करते हुए श्रीमाल सभा के अध्यक्ष सुनिलजी महमवाल के यहाँ पूज्यश्री पधारे, वहाँ से प्रारंभ होकर जुलूस मोतीडुंगरी रोड़ स्थित दादावाडी पहुँचा। वहाँ पर भी गुरुदेव श्री का मंगल प्रवेश, प्रवचन एवं दोपहर में गुरुदेव की पूजा रखी गई।

संध्या में गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा वहाँ से मोहनबाडी पधारे। मन्दिर एवं दादावाडी के साथ वहाँ पर खरतरगच्छ की अनेक महान् विभूतियों का समाधि स्थान है।

पू. गुरुवर्या श्री सज्जन श्रीजी म.सा. की भी समाधि वहीं पर है। वहाँ से 12 अप्रैल को देराऊर दादावाडी में आचार्य देवेश का आगमन साध्वी मण्डल के साथ हुआ तथा दादा गुरुदेव की पूजा आयोजन हुआ।

देराउर ट्रस्ट ने अनेक निर्णय गुरुदेवश्री की आज्ञा से लिए।

13 अप्रैल को गोलेछा गार्डन से प्रतिष्ठा महोत्सव स्थल पर श्रमण-श्रमणी संघ का प्रवेश खरतरगच्छ सघं एवं सुमति कुशल सज्जन ट्रस्ट द्वारा करवाया गया। इसी के साथ प्रारंभ हुआ अजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव का दिव्यनाद!

पूज्य आचार्य श्री के शुभ परमाणुओं से भक्तिमय बने जयपुरवासी चुम्बक से लोह पिण्ड की भांति आकर्षित होकर वहाँ स्तंभित हो चुके थे।

महोत्सव के पहले दिन कुंभस्थापना, दीपकस्थापना, जवारारोपण, जलयात्रा विधान, माणकस्तंभारोपण, भैरव पूजन, नंद्यावर्त पूजन दूआदि विविध पूजन सम्पन्न हुए।

दूसरे दिन पंचकल्याणक महोत्सव का शुभारंभ हुआ। संगीत सम्राट् नरेन्द्र वाणीगोता ने संगीत की स्वर लहरियों से महोत्सव का आगाज किया। चौदह स्वप्नों का दर्शन कराया गया। दोपहर में भक्तामर महापूजन का आयोजन किया गया।

15 अप्रेल को जन्म कल्याणक विधान व महोत्सव किया गया। पूज्य गुरुदेवश्री का मार्मिक प्रवचन हुआ। पूज्यश्री ने जैनत्व आचार पर जोर दिया। दोपहर में श्री पार्श्वपद्मावती महापूजन का आयोजन किया गया।

16 अप्रेल को प्रियंवदा द्वारा बधाई, नामकरण, पाठशाला गमन आदि कार्यक्रम संपन्न हुए। दोपहर में पंच कल्याणक पूजा पढाई गई।

महोत्सव के पांचवें दिन विवाह आदि के कार्यक्रम संपन्न हुए। दोपहर में शान्तिनाथ पंच कल्याणक पूजा एवं शाम को 'सज्जन जीवन गाथा' इस नाटिका की प्रस्तुति आगम ज्योति प.पू.प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. के जीवन पर की गई।

वाटिका की जीवन्त प्रस्तुति जो सभी को मन्त्र मुग्ध करते हुए पूज्याश्री के जीवन से परिचित करवाया। नाटक में लाभार्थी परिवार द्वारा लकी ड्रा के माध्यम से जन उत्साह भी बढाया गया।

18 अप्रेल के दिन दीक्षा कल्याणक का भव्य वरघोडा निकाला गया। सफेद वस्त्रों में श्रावक वर्ग एवं चुनरी में महिलाओं की कतारबद्ध पांक्तियां अनूठी लग रही थी। वरघोडा बडे मन्दिर से प्रारंभ होकर सांगनेरी गेट होते हुए चतुर्विध संघ के साथ कटला मन्दिर पहुँचा। तत्पश्चात धर्मसभा में उमडी जनता को सम्बोधित करते हुए गुरुदेव श्री ने जीवन में संयम का महत्व बताया।

सज्जन नियमांजली प्रतियोगिता के परिणामों की उद्घोषणा की गई। किस विध किजे प्रभु से प्रीत ओपन बुक एक्जाम की उद्घोषणा हुई। इसी के साथ पू. साध्वी डॉ. सौम्यगुणा श्रीजी म. द्वारा लिखित गुण समृद्धि के शिखर पर सम्यक्त्व साधिका (काव्यात्मक प्रस्तुति) साध्वी सम्यक्प्रभा श्रीजी म. द्वारा लिखित समाधि पाथेय, द्वादश तपोविधि, यथानाम तथा गुण धारिका' जिसके लेखन में पू. साध्वी संवर बोधिश्रीजी म. का विशेष योगदान रहा तथा मुमुक्षु शिल्पा द्वारा लिखित 'सतद्धित-समास कुंचिका' पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। शासन रत्न मनोजजी हरण द्वारा धर्म सभा का संचालन करते हुए शेष चढावे करवाए गए।

तत्पश्चात् दीक्षा कल्याणक की शानदार प्रस्तुति हुई।

बाद में वर्षीतप के तपस्वी श्री डायालालजी गोलेछा जीवाणा, श्रीमती मधुबेन गोलेच्छा जीवाणा, श्रीमती मीनाजी अनिलजी बैद इन्दौर का वर्षीतप पारणा हुआ। बाद में रत्नत्रयी पूजा का आयोजन हुआ। सन्ध्या में कुमारपाल राजा की आरती का कार्यक्रम रखा गया।

प्रतिष्ठा एवं अंजनशलाका के पल और अधिक समीप आ चुके थे मात्र एक दिन शेष रहा परमात्मा के पदार्पण में। आचार्य श्री के पुण्य प्रभाव एवं साधना शक्ति से महोत्सव निर्विघ्न सम्पन्नता की ओर अग्रसर था। प.पू.प्र. श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. श्री गुरुभक्ति कटला मन्दिर के भव्य स्वरूप में साकार हो रही थी। हर्षाश्रु उनकी आखों से छलक रहे थे गुरु स्मृति में। सभा को संबोधित करते हुए पूज्याश्री ने कहा– गोलेछा परिवार द्वारा पूज्याश्री के दीक्षा उत्सव पर एक छोटे से घर मन्दिर की प्रतिष्ठा की गई थी।

दिल्ली आगरा राजमार्ग पर स्थित होने से यह जिनालय जनश्रद्धा का केन्द्र बना। 40-45 वर्ष तक नथमलजी दिवान के पुत्र एवं पौत्रों द्वारा इसे संभाला गया। तदुपरान्त खरतरगच्छ संघ को यह मन्दिर एवं कुछ अतिरिक्त जमीन एवं दुकानें अर्पित की गई। गुरुवर्या श्री के जीवन से जुडी इस रचना को चिरस्थायी बनाने एवं इसे विशाल रूप देने हेतु इसका जीर्णोद्धार करवाया गया। पूर्व में अनेक समस्याओं का सामना करना पडा जिसमें बडी समस्या थी पुरानी दुकानों को खाली करवाना। प्रेमचंदजी विनयचंदजी धांधिया की सुझबुझ से यह कार्य सम्पन्न हुआ।

सन् 2013 में सुमति कुशल सज्जन सेवा ट्रस्ट ने खरतरगच्छ संघ की आज्ञा से यह कार्य अपने हाथ में लिया। ट्रस्ट मण्डल के साथ मुन्नीलालजी डागा परिवार का भी इसमें विशेष योगदान रहा। श्री फतेहसिंहजी बरडिया की दीर्घदृष्टि सुझबुझ एवं शासन समर्पण इस मन्दिर निर्माण का विशेष आधार है।

पूज्याश्री ने सभी सहयोगियों को इस अवसर पर साधुवाद दिया। 'संकल्प में ही सिद्धि का वास है' इस भक्ति की सार्थकता 18 अप्रैल को रही थी।

19 अप्रैल प्रतिष्ठा का मंगल दिवस प्रात: 3.30 बजे परमात्मा का अंजनविधान प्रारंभ हुआ। लोगों की भीड़ से मन्दिर का प्रांगण खचाखच भर चुका था। लगभग डेढ घंटे तक चले अंजन विधान के पश्चात् गुरुदेव श्री ने परमात्मा के केवल ज्ञान कल्याणक के प्रतीक रूप में धर्म देशना दी। ऐसाह आभास हो रहा था मानो साक्षात परमात्मा की देशना समवसरण से प्रवाहित हो रही हो। वही मुद्रा.. वही स्थिरता... वही गांभीर्य... इसीलिए आगमों में 'तित्थयरसमो सूरि' कहा है।

प्रात: 8.30 बजे प्रतिष्ठा विधान

आदिनाथ जिनालय (कटला मन्दिर) के पुण्यशाली लाभार्थी

0 जिनमन्दिर एव दादावाडी के भूमिदाता– आगमज्योति गुरुवर्या श्री सज्जन श्रीजी म.सा. का गृहस्थ परिवार (ससुराल) श्री नथमलजी राजमलजी गोलेछा

0 कायमी ध्वजा– श्री तिलोकचन्दजी पिस्तादेवी गोलेछा, जयपुर

0 मुख्य कलश– श्री चन्द्रप्रकाशजी प्रकाशजी लोढा, जयपुर

0 मंडप कलश– श्री कुशलचंदजी, विमलचंदजी सुराणा

0 मूलनायक मुनिसुव्रत स्वामी की मूर्ति भराना– सरदारमलजी नरेन्द्रकुमारजी गोलेछा जयपुर व दिल्ली

0 मूलनायक प्रतिष्ठा– श्री मुन्नीलालजी कुसुमदेवी डागा

0 दादावाडी निर्माण के विशिष्ट सहयोगी– श्री मुन्नीलालजी, महावीरजी गौतमजी, संजयजी डागा परिवार, जयपुर

0 मूलनायक श्री जिनकुशल गुरुदेव की प्रतिमा भराना, प्रतिष्ठा एवं परिकर– श्री शान्तिलालजी, राजेशजी, रोनकजी रोहनजी डागा, जयपुर

0 श्री जिनकुशल गुरुदेव की छवरी– श्रीमती माणकबाई गुमानमलजी मालू

0 अमर ध्वजा– श्री कीर्तिकुमारजी नितिनजी दुग्गड

0 मुख्य कलश– चन्द्रप्रभाजी सुनीलजी बेंगानी

0 मन्दिर द्वारोद्घाटन– श्री विजयकुमार जी अजयजी गोलेछा, जयपुर

0 दादावाडी द्वारोद्घाटन– श्री बाबुलालजी डोसी, चौहटन

0 पंचकल्याणक महोत्सव– राजेन्द्र कुमारजी, संजयजी, प्रदीपजी रूपेशजी पंसारी, जयपुर

प्रारंभ हुआ। आचार्यश्री ने कहा- परमात्मा को हृदय में स्थापित करने हेतु सब सज्ज हो जाओ। मन मन्दिर में एवं जीवन के हर आचरण में जिनाज्ञा को लाना है।

गुरुदेव एवं गुरुवर्या श्री सान्निध्य में विधिकारक मनोजजी हरण, तुषार भाई एवं नरेन्द्र भाई वाणीगोता द्वारा शुभ वेला में ॐ पुण्याहं पुण्याहं ॐ प्रीयन्तां प्रीयन्तां की गूंज के साथ परमात्मा प्रतिष्ठित हुए। सर्वत्र खुशियों का माहौल छा गया। जयनाद से सारा कटला प्रांगण गूंज उठा। वर्षों का स्वप्न साकार हुआ।

प्रतिष्ठा के बाद आचार्य श्री की धर्मसभा हुई। गच्छाधिपतिजी ने, प्रवर्तिनीजी एवं श्री संघ को महोत्सव की निर्विघ्न पूर्णता पर बधाई दी। बालमुनि मलयप्रभसागरजी ने राग दरबारी में पार्श्व चिन्तामणि मेरो... की प्रस्तुति देकर समस्त राजगृही दरबार को भक्तिमय कर दिया। दोपहर में अष्टोत्तरी शान्ति स्नात्र का आयोजन हुआ। चैन्नई, बैंगलोर, कलकत्ता, अजीमगंज, दिल्ली दुर्गापुर, आकोला, टाटानगगर, सूरत, बाडमेर, चौहटन, जगदलपुर, हैदराबाद, इन्दौर एवं आस-पास के विविध स्थानों से तथा देश के कोने कोने से पधारे धर्म श्रद्धालुओं ने महोत्सव को अधिक ऊर्जामय बनाया।

20 अप्रैल महोत्सव की समापन वेला में प्रात: काल में मन्दिर प्रतिष्ठा के पश्चात् प्रथम द्वारोद्घाटन का अवसर परमात्मा के प्रथम दर्शन हेतु सब लालायित थे। दीवान नथमलजी गोलेच्छा परिवार द्वारा मंदिर का द्वार खोला गया। बाबुलालजी डोसी परिवार ने दादावाडी का द्वारोद्घाटन किया। गुरुदेवश्री के साथ चैत्यवंदन करते हुए चतुर्विध संघ आनंदित था। तत्पश्चात् सतरह भेदी पूजा एवं गुरुदेव की पूजा का आयोजन हुआ।

वर्षी तप के पारणे संपन्न

अक्षय तृतीया को वर्षीतप के महान् तपस्वियों ने इक्षु-रस से पारणा कर अपनी तपस्या का उध्यापन उत्सव संपन्न किया। श्री नाकोडाजी तीर्थ में पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री नूतनप्रिया श्रीजी म. के वर्षीतप का पारणा हर्ष व उल्लास के साथ संपन्न हुआ।

श्री पालीताना जिनहरिविहार धर्मशाला में पू. महत्तरा श्री मनोहर श्रीजी पारणा अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संपन्न हुआ। जयपुर कटला मंदिर प्रतिष्ठा महोत्सव में पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. आदि ठाणा एवं प्रवत्तिनी श्री शशिप्रभा श्रीजी म. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में इन्दौर निवासी सौ. मीना बहिन अनिलजी बैद, जीवाणा निवासी श्री डायालालजी गोलेच्छा व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मधुदेवी गोलेच्छा के वर्षीतप का पारणा संपन्न हुआ। श्री शंखेश्वर तीर्थ की पावन भूमि पर दादावाड़ी में पूजनीया प्रवर व्याख्यात्री श्री हेमप्रभा श्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री श्रद्धांजना श्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में मुमुक्षु नीलिया भंसाली के वर्षीतप का पारणा संपन्न हुआ।

सांगानेर दादावाड़ी में प्रतिष्ठा संपन्न

जयपुर सांगानेर की अति प्राचीन दादावाड़ी में काले भैरव व गोरे भैरव की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पू. गणिवर श्री मणिरत्नसागरजी म. पू बालमुनि श्री मलयप्रभसागर जी म. की पावन निश्रा में वैशाख सुदि 8 रविवार ता 22 अप्रैल 2018 को प्रात: शुभ मुहूर्त में संपन्न हुई।

महोत्सव का लाभ श्रीमती कंचन कुमारी अशोकजी अनिलजी अजयजी लूणिया परिवार ने लिया। विधि विधान यशवंतजी गोलेच्छा ने करवाया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

इस दादावाड़ी की प्रतिष्ठा अकबर प्रतिबोधक चतुर्थदादा श्री जिनचन्द्रसूरि ने कराई थी। इसका निर्माण मंत्री कर्मचन्द्र बच्छावत ने कराया था।

ब्यावर में भव्य भागवती दीक्षा सम्पन्न

सुधाजी बरडिया बनी साध्वी संयमसाक्षीजी म.सा.

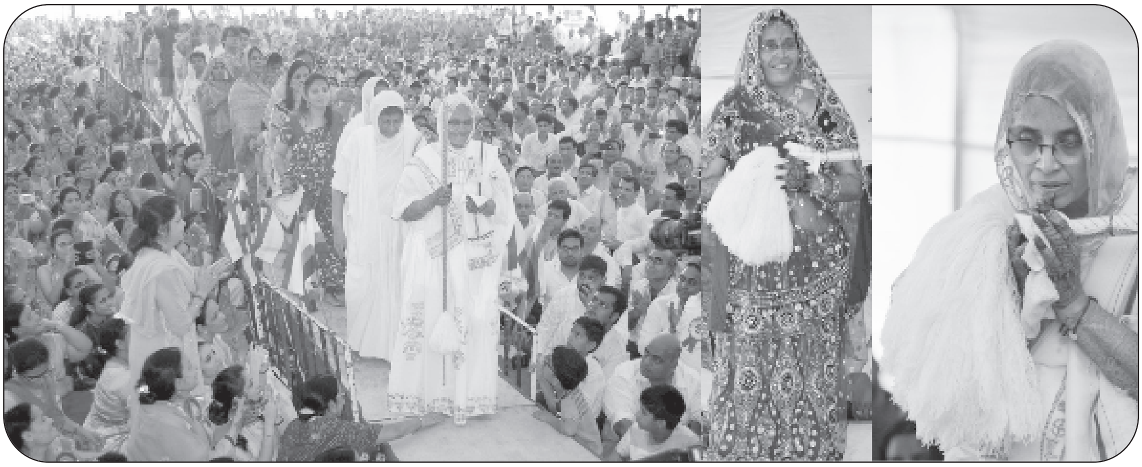

पू. गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के शिष्य पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. सा., पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में तथा पू. साध्वी श्री संयमज्योतिश्रीजी म., पू. संयमगुणाश्रीजी म., पू. श्रद्धान्विताश्रीजी म., पू. शुक्लप्रज्ञाश्रीजी म. आदि ठाणा की सानिध्यता में मुमुक्षु सौ. सुधाजी बरडिया की भागवती दीक्षा 30 अप्रेल 2018 को परम हर्षोल्लास से सम्पन्न हुई।

26 अप्रैल को पूज्यश्री का अत्यन्त सादगी के साथ नगर प्रवेश सम्पन्न हुआ। प्रवचन में पूज्य मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म. ने दीक्षार्थी व दीक्षा का विवेचन करते हुए सादगी को जीवन का श्रृंगार बताया।

28 अप्रैल को प्रवचन फरमाते हुए पू. मनितप्रभसागरजी म.सा. ने संयमी को संसार का सबसे बडा अजूबा बताया। इस अवसर पर डॉ. संयमज्योतिश्रीजी म. एवं श्रद्धान्विताश्रीजी म. ने दीक्षा-जीवन का गुणगान किया। दोपहर में बालक-बालिकाओं द्वारा एक नाटिका प्रस्तुत की गयी।

29 अप्रैल को दीक्षार्थी की भव्य शोभायात्रा आयोजित हुई। प्रभावक प्रवचन के उपरान्त दीक्षार्थी के कपडे रंगने का कार्य सम्पन्न हुआ। इसके बाद दीक्षार्थी द्वारा वर्षीदान दिया गया। रात्रि में अभिनंदन समारोह एवं विदाई कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें चेन्नई से पधारे श्री मोहनजी-मनोजजी ने संगीत-रंग जमाया।

30 अप्रैल को ठीक 8.15 पर दीक्षा का कार्यक्रम शुरू हुआ। इस अवसर पर सम्पूर्ण भारत के कोने कोने से सैंकडों श्रद्धालु पधारे थे।

अनुशासन, त्याग और मर्यादा की त्रिवेणी में पावन संयम वाटिका में चारों तरफ मात्र जनसैलाब उमड रहा था।

पूज्यश्री ने कहा कि सुधाजी दीक्षा लेकर अभिनंदना का कार्य कर रहे हैं पर उनके पति देव दीक्षा की आज्ञा देकर अनुमोदना का कार्य कर रहे हैं।

सुन्दर रीति-गति से चले इस कार्यक्रम की यह गरिमा रही कि बिना पंखे-कूलर के लोग 4 घण्टे तक भी शुरू से अन्त तक कार्यक्रम की महिमा को श्रद्धा के नयनों से निहारते रहे।

सौ. सुधा बरडिया को साध्वी डॉ. संयम ज्योतिश्रीजी म. की शिष्या घोषित करते हुए नूतन नाम साध्वी संयमसाक्षी श्रीजी म. दिया गया।

ब्यावर में आराधना भवन का उद्घाटन

पू. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 4 एवं पू. साध्वी संयमज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा 4 के सानिध्य में ता. 27 अप्रैल 2018 को शुभ मुहूर्त में आराधना भवन का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

स्व. श्री कल्याणमल जी कांकरिया की पावन स्मृति में धर्मपत्नी श्री ज्ञानकंवर कांकरिया की सद्प्रेरणा से श्री ज्ञान कल्याण आराधना भवन-श्री खरतरगच्छ आराधना भवन के निर्माण भूमिदान सह निर्माण का सम्पूर्ण लाभ उन्हीं के सुपुत्र श्रावकप्रवर बहादुरमलजी सौ. सुशीलाजी के द्वारा लिया गया।

इस अवसर पर सैंकडों व्यक्ति उपस्थित थे। आराधना भवन में पू. मुनिवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. का मननीय प्रवचन सम्पन्न हुआ जिसमें उन्होंने आराधना भवन को आराधना-साधना का निमित्त बताया। अनेक श्रद्धालुओं ने मुनिश्री की प्रेरणा से शांतिनाथ मंदिर के उपासरे एवं नूतन आराधना भवन में प्रति सप्ताह सामायिक करने का नियम स्वीकार किया। श्री जैन श्वे खरतरगच्छ संघ ब्यावर की ओर से लाभार्थी परिवार का सम्मान किया गया।

किशनगढ़ में शिलान्यास समारोह

राजस्थान के प्राचीन ऐतिहासिक किशनगढ़ नगर की प्राचीन दादावाड़ी के जीर्णोद्धार का शुभारंभ पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से हुआ।

दादावाड़ी के विशाल परिसर में मुनिसुव्रत स्वामी जिनमंदिर का खात मुहूर्त्त 20 अप्रैल को पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 4 की पावन निश्रा में संपन्न हुआ।

ता. 26 अप्रैल को शिलान्यास समारोह संपन्न हुआ। मुख्य शिला व स्वामिवात्सल्य का लाभ एडवोकेट विमलचंदजी बाफना ने लिया।

इस अवसर पर राजस्थान मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष माननीय न्यायाधीश श्री प्रकाशजी टाटिया तथा प्रदेश भाजपा के उपाध्यक्ष विधायक श्री मोहनलालजी गुप्ताजी का आगमन हुआ। पूज्य आचार्य श्री ने शिलान्यास का मूल्य समझाते हुए संस्कार-वपन की प्रेरणा दी। शिलान्यास समारोह अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। विधि विधान यशवंतजी गुलेच्छा ने करवाया। इस अवसर पर पूज्य श्री ने फरमाया कि चरणों का उत्थापन किये बिना दादावाड़ी का जीर्णोद्धार कराया जायेगा।

'जैन जीवन शैली' का विमोचन सम्पन्न

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा आलेखित लोकप्रिय ग्रंथ जैन जीवन शैली (रंगीन) प्रथम खण्ड के तृतीय संस्करण का विमोचन ब्यावर नगर में दीक्षा समारोह के दौरान सम्पन्न हुआ।

विमोचन का लाभ श्री शांतिलालजी पारसमलजी कांकरिया ब्यावर (चेन्नई-तिरूवन्नामलाई) वालों ने लक्ष्मी का सदुपयोग करके प्राप्त किया।

श्री जिन हरि विहार जीर्णोद्धार समिति का गठन

पालीताना स्थित श्री जिनहरि विहार धर्मशाला में पीछे बने विशाल हॉल आदि का जीर्णोद्धार कार्य प्रारंभ हो रहा है। पालीताना में वर्षीतप के पारणे के अवसर पर अध्यक्ष संघवी विजयराज जी डोसी, महामंत्री बाबुलालजी लूणिया आदि ट्रस्ट मंडल की उपस्थिति में पूजनीया महत्तरा पदविभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से जीर्णोद्धार समिति का गठन किया गया। श्री मोतीलालजी झाबक रायपुर को इस समिति का चेयरमेन बनाया गया।

जीर्णोद्धार की योजना का प्रारूप निश्चित किया गया। तत्काल प्रवचन हॉल का बड़ा लाभ दानवीर सेठ रायपुर निवासी श्री मोतीलालजी संपतराजजी झाबक परिवार ने लिया। साथ ही उसी समय कई भाग्यशालियों ने कमरों का लाभ लेकर पुण्योपार्जन किया।

विहार–यात्रा

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य बाल मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 6 मालपुरा से टोंक होते हुए ता. 8 को जयपुर पधारे। जयपुर पधारने पर जैन संघ के समस्त सम्प्रदायों व राजपूत सभा, माहेश्वरी, अग्रवाल, सिक्ख आदि सभी समाजों द्वारा पूज्य श्री का भव्य अभिनंदन व स्वागत किया गया। संघ मंत्री श्री ज्योति कुमारजी कोठारी ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये विशेष पुरुषार्थ किया। जयपुर के उपनगरों में विहार, प्रवचन के पश्चात् कटला मंदिर की प्रतिष्ठा हेतु ता. 13 को प्रवेश हुआ। गणिवर श्री मणिरत्नसागरजी म. का भी आज पदार्पण हुआ। ता. 15 को पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. का ब्यावर की ओर विहार हुआ।

कटला मंदिर प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् ता. 20 को शाम को विहार कर प्राकृत भारती अकादमी पधारे। श्री डी.आर. मेहता के साथ विस्तृत चर्चा हुई। वहाँ से पूज्यश्री वासुपूज्य मंदिर पधारे। ता. 21 को मान सरोवर एम.के. जैन के यहाँ होते हुए मानसरोवर मीरा पथ पधारे। दादावाड़ी की प्रतिष्ठा के पश्चात् ता 22 को शाम को विहार कर सोडाला पधारे। जहाँ श्री संघ द्वारा प्रवेश करवाया गया। वहाँ से विहार कर ता. 26 को किशनगढ़ पधारे। दादावाडी जिनमंदिर शिलान्यास विधान के पश्चात् विहार कर विजयनगर होते हुए ता. 1 मई 18 को भीलवाड़ा पधारे। साथ ही जयपुर निवासी राजीव भंडारी, जितेन्द्र (वीरु) छाजेड़ व सोनू लोढ़ा (बोराडा) ने जयपुर से किशनगढ़ तक विहार सेवा का पूरा लाभ लिया। जयपुर से लेकर चित्तौड तक के विहार प्रवास में केयुप के सराना-भीलवाडा निवासी सुमित दुनीवाल पूर्ण रूप से साथ रहकर विहार व्यवस्थाओं में अपनी पूरी अनुमोदनीय सेवाऐं दी।

भीलवाड़ा दादावाड़ी में पंचम दादा मेला 11 व 12 मई को

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरि जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म. की निश्रा में भीलवाड़ा दादाबाड़ी में दादा मेले का आयोजन होगा। तृतीय दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि जी म.सा. के आचार्य पदारोहण दिवस, ज्येष्ठ वदी 11, दिनांक 11 एवं 12 मई 2018 को दो दिवसीय मेले का आयोजन होगा। 11 मई को रात्रि भक्ति जागरण होगा। 12 मई को प्रात: 10 बजे प्रवचन, सम्मान समारोह होगा, तत्पश्चात दादा गुरुदेव की बडी पूजन का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम पश्चात साधर्मिक वात्सल्य भी होगा। भक्ति जागरण में श्री विजय सोनी, श्री राजीव विजयवर्गीय, श्री अरिहंत कांकरिया भजनों की प्रस्तुति देंगे। ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष श्री ज्ञानचंद सुराणा ने सभी गुरुभक्तों को दादा मेले के अवसर पर पधारने की अग्रिम विंनती है। बाहर से पधारने वालों के लिए विशेष आवास व्यवस्था रहेगी। जीवदया के प्रकल्प कबूतर खाना का उद्घाटन 11 मई को प्रात: 8.30 बजे होगा। समस्त आयोजन जैन दादाबाड़ी, पंचमुखी दरबार के सामने भीलवाड़ा पर होगा। समस्त कार्यक्रम में ट्रस्ट मंडल, दादा गुरुदेव मित्र मंडल, खरतरगच्छ युवा परिषद(केयुप), महिला मंडल आदि का पूर्ण सहयोग रहेगा।

लाभार्थी सेठिया परिवार का सम्मान

रेलदादावाड़ी मध्ये भगवान महावीर स्वामी के नूतन मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा

बीकानेर, 30 अप्रैल। जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक प.पू. उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागर जी म.सा. के सान्निध्य में सोमवार को गंगाशहर मार्ग पर स्थित रेल दादावाड़ी में नवनिर्मित भगवान महावीर स्वामी के मंदिर का अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव धर्मसभा, लाभार्थी परिवार के सम्मान के साथ संपन्न हुआ। मंगलवार को सुबह छह बजे द्वार उद्‌घाटन व सतरभेदी महापूजन हुआ।

नूतन जिनालय की अंजनशलाका एवं प्राण प्रतिष्ठा सोमवार को ब्रह्ममुहूर्त में पू. गुरुवर श्री मनोज्ञसागरजी ने सम्पन्न कराई। उसके बाद भगवान महावीर का केवल्य ज्ञान कल्याणक, निर्वाण कल्याणक विधान, 108 अभिषेक, माणक स्तंभन आरोपण, तोरण बंदन, शुभ मुहूर्त में भगवान महावीर के साथ देवी पद्मावती व नाकोड़ा भैरव की प्रतिमाओं की स्थापना की गई।

धर्म सभा में श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ ट्रस्ट के सचिव शांतिलाल सुराणा, सहमंत्री अशोक पारख, कोषाध्यक्ष कंवर लाल, निर्मल पारख, अजीत खजांची, मोती नाहटा, पूर्व सरपंच मेघराज सेठिया, छगनलाल भुगड़ी सहित जैन समाज के प्रतिष्ठित लोगों ने मंदिर निर्माण के प्रमुख सहयोगी गंगाशहर निवासी श्री केशरीचंदजी, श्री झंवरलालजी, श्री मनोजजी सेठिया एवं श्रीमती रतनी देवी, श्रीमती कस्तुरी देवी, श्रीमती मधु सेठिया का सम्मान किया एवं श्री खरतरगच्छ संघ ट्रस्ट की ओर से अभिंनदन पत्र भेंट किया गया। सोमपुरा, मूर्तिकारक, विधिकारक, संगीतकार एवं पत्रकार का सम्मान सेठिया परिवार ने किया। मगन कोचर, पिन्टू स्वामी, सुनील पारख, विचक्षण महिला मंडल ने भक्ति गीत पेश किया।

पू. उपाध्याय भगवंत श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. ने प्रवचन मे कहा कि चार शताब्दी प्राचीन रेलदादावाड़ी में भगवान महावीर स्वामी के मंदिर का निर्माण जैन शासन के इतिहास में अनुमोदनीय व चिर स्मरणीय रहेगा। गंगाशहर के सेठिया परिवार ने कठिन परिस्थितियों व परीक्षा के बावजूद देव, गुरु व धर्म के प्रति निष्ठा, समर्पण भाव से मंदिर के निर्माण का लाभ लेकर युगों-युगों तक अमर पद प्राप्त कर लिया। गायककार पिंटू स्वामी ने गुरु मनोज्ञसागरजी म.सा. के सामने जैन धर्म की मर्यादाओं का पालन करने का संकल्प लिया।

अशोक पारख, बीकानेर

चंवलेश्वर में खनन मुहूर्त्त संपन्न

चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर तीर्थ के त्रिशिखरीय जिनालय का भूमि पूजन व खनन मुहूर्त पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूज्य छत्तीसगढ रत्ना महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में संपन्न हुआ।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए संघमित्राश्रीजी म.सा. ने कहा कि मनुष्य के पुण्योदय से ही धन शुभ कामों में लगता है। व्यक्ति अपने जीवन में भव्य घर का खनन करता है, वह पाप कार्य जबकि मन्दिर का खनन पुण्य कार्य कहलाता है। धर्म में पैसा खर्च करने से इस भव के साथ ही अगले भव के पुण्य को भी कमाता है। धर्म में लगा पैसा कभी भी व्यर्थ नहीं जाता है इसलिए अपनी कमाई का निश्चित अंश धर्मकार्य में अवश्य खर्च करना चाहिए। धन की तीन गति बताते हुए कहा कि धन दान, भोग ओर नाश में से भोग ओर नाश पाप का मूल है जबकि दान पुण्य कहलाता है।

सेवाभावी अमीझराश्रीजी म.सा. ने कहा कि मन्दिर में मूर्ति की, मूर्ति को पूजा की, पूजा को श्रद्धा की, श्रद्धा को साहस की जरूरत होती है। इस लिए तीर्थ के प्रति पूरी आस्था, विश्वास, समर्पण के भाव रखते हुए मन्दिर का निर्माण कराने से महिमा बढ़ेगी।

जहाज मन्दिर पत्रिका के सम्माननीय संस्था संरक्षक

श्री मुल्तान जैन श्वे. सभा (श्री मुल्तान मन्दिर), आदर्श नगर, जयपुर
श्री अवन्ति पार्श्व. तीर्थ जैन श्वे.मू.पू. मारवाड़ी समाज ट्रस्ट, उज्जैन
श्री जैन मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट, इचलकरंजी
श्री जैन श्वे. संघ २(महावीर साधना केन्द्र) जवाहर नगर, जयपुर
श्री जैन श्वे. संस्था (वासुपूज्य आराधना भवन), मालवीय नगर, जयपुर
श्री दिल्ली गुजराती श्वे.मू.पू. जैन संघ गुजरात विहार, दिल्ली
श्री जिनकुशलसूरि जैन खरतरगच्छ दादावाड़ी ट्रस्ट, नईदिल्ली
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्रीसंघ, पचपदरा
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ सम्पत्ति ट्रस्ट, भीलवाड़ा
श्री देराऊर पार्श्वनाथ तीर्थ एवं देराऊर दादावाड़ी, जयपुर
श्री जैन श्वे. नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर
श्री हस्तिनापुर जैन श्वेताम्बर तीर्थ समिति, हस्तिनापुर
श्री जैन श्वे. वासुपूज्यजी म. का मंदिर ट्रस्ट, उदयपुर
श्री जैन श्वे. चौमुख दादावाड़ी वैशाली नगर, अजमेर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ जाटावास, लोहावट
श्री बडौदा जैन श्वे. खरतरगच्छ, संघ, वडोदरा
श्री श्वेताम्बर जैन श्रीमाल सभा, जयपुर
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर
श्री अजितनाथ जैन नवयुवक मंडल, नंदुरबार
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ, सांचोर
श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक श्री संघ, उदयपुर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, अजमेर
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, गाजियाबाद
श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, गुरला (भीलवाड़ा)
जैन श्री संघ, सेलम्बा, (नर्मदा, गुजरात)
श्री पार्श्वमणि तीर्थ, पेद्दतुम्बलम्, आदोनी
श्री जैन श्वे. संघ जैन मंदिर, तलोदा
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, केकड़ी
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, ब्यावर
श्री जैन श्री संघ, धोरीमन्ना
श्री उम्मेदपुरा जैन श्री संघ, सिवाना
श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, खापर
जैन श्री संघ, वाण्याविहिर
श्री कुशल पत संस्था, खापर
श्री नमिनाथ पत संस्था, खापर
श्री हाला जैन संघ, ब्यावर-फालना
श्री जिन हरि विहार समिति, पालीताणा
श्री हरखचंद नाहटा स्मृति न्यास, नई दिल्ली
श्री जिनदत्तसूरि जैन श्वे. दादावाडी, दोंडाईचा
श्री जैसलमेर लौद्रवपुर जैन श्वे. ट्रस्ट, जैसलमेर
श्री जिन कुशल मंडल (बाड़मेर) इचलकरंजी
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, मुम्बई
श्री रायॅल काम्पलेक्स श्वे. मूर्तिपूजक संघ, मुंबई
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, भांयदर, मुंबई
श्री जैन श्वे. श्रीसंघ, दोड्डबल्लापुर (बैंगलोर)
श्री संभवनाथ श्वेताम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, वडपलनी, चैन्नई
श्री वासुपूज्यस्वामी जैन श्वे. मंदिर ट्रस्ट, अरूम्बकम, चैन्नई
श्री कुन्थुनाथ जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ (रजि.) सिंधनूर
श्री धर्मनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट-जिनदत्तसूरि जैन सेवा मंडल, चेन्नई
श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाडी बाड़मेर ट्रस्ट- मालेगॉव
श्री जैन श्वे. आदीश्वर भगवान मंदिर ट्रस्ट, सोलापुर
श्री जैन श्वे. मू.पू. श्री संघ, बिजयनगर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, जसोल
श्री शीतलनाथ भगवान मन्दिर एवं दादा जिनकुशलसूरि समिति, पादरू
श्री आदिनाथ जिनमंदिर एवं जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट, हुबली
श्री राजमल भरतकुमार संखलेचा, रायपुर छत्तीसगढ़
श्री राजेन्द्र कुमार संचेती पुत्र श्री ताराचन्दजी संचेती, जयपुर
- जैन श्वेताम्बर श्री संघ, शेरगढ़
- श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, इन्दौर
- श्री जैन मरुधर संघ, हुबली (कर्णाटक)
- श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट, सारंगखेडा
- श्री जिन कुशल सूरि बाडमेर जैन श्री संघ, सूरत
- श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट, अग्रहार, मैसूर
- श्री जैन श्वेताम्बर मू.पू. श्री संघ, ऊटी (नीलगिरी तमिलनाडू)
- दादावाड़ी श्री जिनकुशलसूरि जिनचन्द्रसूरि ट्रस्ट, अयनावरम् चैन्नई
- श्री शान्तिनाथ जिनालय ट्रस्ट, चौहटन

विचक्षण विद्यापीठ का उद्घाटन

दुर्ग जिले के कुम्हारी गांव स्थित कैवल्यधाम तीर्थ परिसर के पास नवनिर्मित शैक्षणिक संकुल विचक्षण विद्यापीठ का उद्घाटन ता. 6 मई 2018 को होने जा रहा है। इसका निर्माण पूज्य मुनिराज अध्यात्म योगी श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. आदि की पावन प्रेरणा से हुआ है। ता. 4 को समारोह का प्रारंभ होगा। ता. 5 को भागवती दीक्षा का भव्य आयोजन होगा। ता. 6 को विधिवत् इसका उद्घाटन होगा।

जहाज मन्दिर पत्रिका के सम्माननीय संरक्षक

श्री लालचन्दजी कानमलजी गुलेच्छा, अक्कलकुआं
श्री राजेन्द्रकुमार राणुलालजी डागा, अक्कलकुआं
श्री भंवरलालजी हस्तीमलजी कोचर, अक्कलकुआं
श्री ज्ञानचन्दजी रामलालजी लूणिया, अजमेर
श्री पूनमचन्दजी नैनमलजी मरड़िया, डंडाली- अहमदाबाद
श्री माणकमलजी मांगीलाल नरेशकुमारजी धारीवाल, चौहटन-अहमदाबाद
श्री विनोद शर्मा पुत्र श्री घनश्यामप्रसाद शर्मा, सोमपुरा, आगरा
श्री जगदीशचन्द, नितेश कुमारजी छाजेड़ (हरसाणी-बाड़मेर) हाल इचलकरंजी
श्री देवीचंदजी छोगालालजी वडेरा, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी ओमप्रकाशजी पारसमलजी छाजेड़, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री संपतराजजी लूणकरणजी संखलेचा, बाड़मेर- इचलकरंजी
श्री मांगीलालजी खीमराजजी छाजेड़, रामसर- इचलकरंजी
श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़, हरसाणी वाले इचलकरंजी
श्री ओमप्रकाशजी मुलतानमलजी वैद मुथा कवास वाले, इचलकरंजी
श्री छगनलालजी देवीचंदजी मेहता, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री अशोककुमारजी सुरतानमलजी बोहरा, भिंयाड़-इचलकरंजी
श्री मिश्रीमलजी विजयकुमार रणजीत ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री शिवकुमार रिखबचंदजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
स्व. रूपसिंहजी मदनसिंह रतनसिंह राजपुरोहित-इचलकरंजी
श्री फरसराजजी रिखबदासजी सिंघवी, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री हीराचंदजी मांगीलालजी बागरेचा, सिवाना-इचलकरंजी
शा. मोतीलाल एण्ड सन्स, इचलकरंजी
श्री प्रवीणकुमार पृथ्वीराजजी ललवानी, इचलकरंजी
श्री पुखराजजी आसुलालजी बोहरा, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री पुखराजजी सरेमलजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री भीखचंदजी सुमेरमलजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी कन्हैयालालजी भूरचंदजी मालू, हरसाणी-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी रमेश अशोक लूंकड़ मोकलसर-इचलकरंजी
श्री रिषभलाल मांगीलालजी छाजेड़, इंचलकरंजी
शा. पीरचंद बाबुलाल एण्ड कं., बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री अरूणकुमारजी बापूलालजी डोसी, इन्दौर
श्री टीकमचन्दजी हीराचन्दजी छाजेड़, उज्जैन
डॉ. यू.सी. जैन अजयजी संजयजी लषितजी पार्थ जैन, उदयपुर
श्री फतेहलालजी सुल्तानजी लक्ष्मणजी आजादजी संजयजी सिंघवी, उदयपुर
श्री मोहनसिंहजी पुत्र राजीव पौत्र चिराग दलाल, सुराणा, उदयपुर
श्री सुधीरजी चावत, उदयपुर
श्री किरणमलजी सावनसुखा, उदयपुर
श्रीमती शान्ति मेहता ध.प.श्री विजयसिंहजी मेहता, उदयपुर
श्री दौलतसिंहजी प्रतापसिंहजी गाँधी, उदयपुर
श्री शंकरलालजी बाफना, उदयपुर
श्रीमती शांतादेवी जुहारमलजी गेलड़ा, उदयपुर
श्री नगराजजी पवनराजजी अशोककुमारजी मेहता, उदयपुर
श्री बलवन्तसिंहजी करणसिंह सुरेन्द्रसिंह पारख, उदयपुर
श्री मीठालालजी मनोजकुमार गुणेशमलजी भंसाली, उम्मेदाबाद-बैंगलोर
श्री दिलीपजी छाजेड़, खांचरोद-उज्जैन
श्री कुरीचन्दजी चन्दनमलजी मलासिया, ऋषभदेव
शा. कांतिलालजी पारसमलजी कागरेचा, ओटवाला
श्रीमती शांतिदेवी जुगराजजी पंचाणमलजी मरडिया, चितलवाना-कारोला-मुंबई
घोड़ा श्री सुमेरमलजी मोतीलालजी बाबूलालजी श्रीश्रीमाल, केशवणा
श्री रामरतनजी नरायणदासजी छाजेड़, केशवणा- डोम्बीवल्ली
श्री लक्ष्मीचन्दजी केसरीमलजी चण्डालिया, कोटा
श्री पन्नालालजी महेन्द्रसिंहजी गौतमकुमारजी नाहटा, कोलकात्ता-दिल्ली
श्री जगदीशकुमार खेताजी सुथार, कोलीवाड़ा
श्री प्रेमचन्दजी संतोकचन्दजी गुलेच्छा, खापर
सौ. रूपाबाई गुलाबचन्दजी चौरड़िया, खापर
श्री पारसमलजी मांगीलालजी लूणावत, खेतिया
श्री प्रमोदकुमारजी, बंशीलालजी भंसाली, खेतिया
श्री किशनलालजी हसमुख कुमार मिलापजी भंसाली, खेतिया

श्रीमती मानकुँवरबाई गेनमलजी भंसाली, खेतिया-नासिक
श्री नेवलचन्दजी मोहनलालजी जैन, गाजियाबाद
शा. मुलतानमलजी भवंरलालजी नाहटा, गांधीनगर
मिस्त्री मोहनलाल आर. लोहार, पो. चांदराई जि.जालोर
शा. जांवतराजजी भीमराजजी मोहनलालजी गांधी, चितलवाना
श्री लाधमलजी मावाजी मरड़िया, चितलवाना
श्री सुरेशकुमार हिन्दूमलजी लूणिया, धोरीमन्ना-चैन्नई
श्री हीराचंदजी बबलसा गुलेच्छा, टिंडीवनम-चैन्नई
शा. डूंगरचंदजी यशकुमारजी ललवानी, सिवाना-चैन्नई
श्री कन्हैयालालजी सुभाषचंदजी नरेशचंदजी रांका, चैन्नई
शा. समरथमलजी सोनाजी रांका, उम्मेदाबाद-चैन्नई
श्री सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया, चैन्नई
श्री पदमकुमारजी प्रवीणकुमारजी टांटिया, जोधपुर-चैन्नई
शा. गिरधारीलालजी बादरमलजी संखलेचा, पादरू-चैन्नई
श्रीमती कमलादेवी प्रकाशचंदजी लोढ़ा, चैन्नई
श्री पदमचंदजी दिनेशकुमारजी कोठारी, चैन्नई
मै. एम. के. कोठारी एण्ड कम्पनी, चैन्नई
श्री वीरेन्द्रमलजी आशीषकुमार मेहता वडपलनी-चैन्नई
श्री एस. मोहनचंदजी ढ़ड्ढा, चैन्नई
श्रीमती कमलादेवी मूलचंदजी गोलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
श्री माणकचंदजी धर्मचंदजी गोलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
शा. लालचन्दजी कान्तीलालजी छाजेड़, गढ़सिवाना-चैन्नई
श्रीमती इचरजबाई मिलापचंदजी डोसी, चैन्नई
एम. नरेन्द्रकुमारजी कवाड़, चैन्नई
श्री नेमीचंदजी राजेशकुमारजी कटारिया, चैन्नई
श्री आर. मफतलाल, सौभागबेन चन्दन, चैन्नई
श्री बाबूलालजी हरखचन्दजी छाजेड़ (सी.टी.सी.), चेन्नई
शा. जेठमलजी आसकरणजी गुलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
मै. राखी वाला, चैन्नई
श्री द्वारकादासजी पीयुष अनिल भरत महावीर डोशी, चौहटन
श्री महताबचन्दजी विशालकुमारजी बांठिया, जयपुर-मुंबई
श्री जसराज आनन्दकुमार चौपड़ा, जयपुर
शा. प्रकाशचंदजी विजयचंदजी लोढ़ा, जयपुर
श्री जुगराजजी(सी.ए.) कैलाशजी दिनेशजी चौधरी, जालोर- भायंदर
श्री विमलचंदजी सौ. मेमबाईसा सुराणा, जयपुर
श्री किशनचन्दजी बोहरा सौ. सुधादेवी, जयपुर
श्री कनकजी श्रीमाल, जयपुर
श्री महावीरजी मुन्नीलालजी डागा, जयपुर
श्रीमती जतनबाई ध.प. स्व. मेहताबचंदजी गोलेछा, जयपुर
श्रीमती सरोज फतेहसिंहजी सिद्धार्थजी बरड़िया, जयपुर
श्री रूपचन्दजी नरेन्द्र देवेन्द्र नमनजी भंसाली, हालावाले-जयपुर
श्री दुलीचन्दजी, धर्मेशकुमारजी टांक, जयपुर
श्री महरचन्दजी मनोजकुमारजी धांधिया, जयपुर
श्री मनमोहनजी अनुपजी बोहरा, जयपुर
श्री जितेन्द्रजी नवीन अजय नितीन महमवाल-श्रीमाल, जयपुर
श्री राजेन्द्रकुमारजी संजयजी संदीपजी छाजेड़, जयपुर
श्री इन्द्रचन्दजी विमलचन्दजी पदमचन्दजी ज्ञानचन्दजी भण्डारी, जयपुर
श्री विमलचन्दजी महावीरचन्दजी पंसारी, जयपुर
श्री पारसमलजी पंकजकुमारजी गोलेछा, जयपुर
श्री शांतिचन्दजी विमलचन्दजी पदमचन्दजी पुंगलिया, जयपुर
श्री हुकमीचन्दजी विजेन्द्रजी पूर्णेन्द्रजी कांकरिया, जयपुर
श्री ताराचन्दजी विजयजी अशोकजी राजेन्द्रजी संचेती, जयपुर
श्री भीमसिंहजी तेजसिंहजी खजांची, जयपुर
श्री सौभागमलजी ऋषभकुमारजी चौधरी, जयपुर
श्री संतोषचन्दजी विजयजी अजयजी झाड़चूर, जयपुर
श्री रतनलालजी अतुल अमित श्रीश्रीमाल हालावाले जयपुर
श्री माणकचन्दजी राजेन्द्रजी ज्ञानचन्दजी गोलेछा, जयपुर
श्री उमरावचन्दजी प्रसन्नचन्दजी किशनचन्दजी डागा, जयपुर
श्री अभयकुमारजी अशोककुमार अनूपकुमार पारख-जयपुर
श्री त्रिलोकचन्दजी प्रेमचन्दजी सिंघी, जयपुर
श्री घनश्यामदास दीपककुमारजी पारख, हालावाले जयपुर
श्री सुरेन्द्रमलजी गजेन्द्रजी धर्मेन्द्रजी पटवा, जालौर
संघवी शा. अशोककुमारजी मानमलजी गुलेच्छा, जीवाणा- चैन्नई
श्री भंवरलालजी, बाबूलालजी पारख, जीवाणा
संघवी कानमलजी बाबूलालजी नेमीचंदजी अशोकजी गोलेछा, जीवाणा-चेन्नई
श्री खीमचन्दजी अशोककुमारजी कंकूचौपड़ा, जीवाणा- बैंगलोर
श्रीमती प्रेमलताजी श्री चन्द्रराजजी सिंघवी, जोधपुर
श्री गोविन्दचन्दजी राजेशजी राकेशजी मेहता जोधपुर-मुम्बई
श्री लक्ष्मीचन्द हलवाई पुत्र श्री जेठमलजी अग्रवाल, जोधपुर
श्री लूणकरणजी घीसुलालजी सौ. चन्द्रादेवी सेठिया, तलोदा
श्रीमती इन्द्रा महेशजी जैन नाहटा नई दिल्ली
श्री बी.एम. जैन लक्ष्मीनगर, दिल्ली
श्री घनश्यामदासजी नवीनजी सुशीलजी सुनीलजी जैन, नई दिल्ली
श्री शांतिलालजी जैन दफ्तरी, नई दिल्ली
श्री शीतलदासजी विरेन्द्रकुमारजी राक्यान, नई दिल्ली
श्री ज्ञानचन्दजी महेन्द्रकुमारजी मोघा, नई दिल्ली
श्री पवित्रकुमारजी सुनीलजी, गुनीतजी बाफना, कोटा-नई दिल्ली
श्री अरुणकुमारजी हर्षाजी हर्षावत, नई दिल्ली
श्री राजकुमारजी ओमप्रकाशजी रमेशकुमारजी चौरड़िया, नई दिल्ली
श्री मोतीचन्दजी श्रीमती आभादेवी पालावत, नई दिल्ली
श्री विरेन्द्रजी राजेन्द्रजी अभिषेकजी आदित्यजी पीयूषजी मेहता, दिल्ली

श्री रिखबचंदजी राहुलकुमारजी मोघा, नई दिल्ली
श्री अशोककुमारजी श्रीमती चंदादेवी जैन, नई दिल्ली
श्रीमती नीलमजी सिंघवी, नई दिल्ली
श्रीमती विजयादेवी धीरज बहादुरसिंहजी दुग्गड़, नई दिल्ली
श्री शांतिप्रकाशजी अशोककुमार प्रवीण सिंधड़, अनूपशहर, नई दिल्ली
श्रीमती भारतीबेन शांतिलालजी चौधरी, नई दिल्ली
श्री सुमेरमलजी मिश्रीमलजी बाफना, मोकलसर-दिल्ली
श्री चन्द्रसिंहजी विपुलकुमारजी सुराणा, दिल्ली
श्री प्रकाशकुमारजी प्रेणितकुमारजी नाहटा, जसोल-दिल्ली
शा. महेशकुमारजीर विरधीचंदजी गांधी, धोरीमन्ना
श्रीमती भंवरीदेवी गोरधनमलजी प्रतापजी सेठिया, धोरीमन्ना
संघवी मुथा चन्दनमलजी महेन्द्र नरेन्द्र तातेड़, पादरू-नंदुरबार
श्री भँवरलालजी ललित राजु कैलाश गौतम संखलेचा, पादरू- चैन्नई
श्री मूलचंदजी बख्तावरमलजी बाफना हीराणी, पादरू
संघवी श्री पूनमचंदजी पुखराजजी छाजेड़, पादरू-मुम्बई-चैन्नई
श्री भंवरलालजी नेमीचन्दजी कटारिया, पादरू
श्री रूपचन्द जवेरीलालजी गोलेछा ढालूवाले, पादरू
मेहता शा. पुखराज सुमेरमलजी तातेड़, पादरु-सेलम
श्री बाबूलालजी शर्मा, राकांवत डेकोरेटर्स, तखतगढ़-पाली
शिल्पी श्रवणकुमार सुरताजी प्रजापति,गोदावरी मार्बल, पिण्डवाड़ा
श्री रतनचन्दजी सौ. निर्मलादेवी बच्छावत, फलोदी
श्री रमेशचन्दजी सुशीलकुमारजी बच्छावत, फलोदी
श्री मनोहरमलजी दलपतकुमार महेश हरीश नाहटा, हालावाले फालना
श्री खूबचन्दजी चन्दनमलजी बोहरा, हालावाले फालना
श्री मोतीचन्दजी फोजमलजी झाबक, बड़ौदा
श्री चम्पालालजी झाबक परिवार, बड़ौदा
श्री आसुलालजी मांगीलालजी बाबूलालजी डोशी, चौहटन-बाड़मेर
श्री चिन्तामणदासजी, तगामलजी बोथरा, बाड़मेर
श्री रिखबचंदजी प्रकाशचन्दजी सेठिया, चौहटन-बाड़मेर
श्री रतनलालजी विनोदकुमार गौतमकुमार बोहरा, हालावाले, बाड़मेर
श्री आसूलालजी ओमप्रकाशजी संकलेचा, बाड़मेर
श्री रामलाल, महेन्द्र, भरत, धवल मालू, डाकोर-बाडमेर
श्री जगदीशचन्द देवीचन्दजी भंसाली, बाड़मेर-पाली
श्री शंकरलाल केशरीमलजी धारीवाल, बाड़मेर
श्री बाबूलाल भगवानदासजी बोथरा, बाड़मेर
शा. मनसुखदास नेमीचंदजी पारख, हरसाणीवाला, बाड़मेर
शा. सुरेशकुमार पवनकुमार मुकेशकुमार पुत्र श्री शंकरलाल बोहरा, बाड़मेर
श्री मुन्नीलालजी जयरूपजी नागोत्रा सोलंकी, बालवाड़ा
शा. अमृतलालजी पुखराजजी कटारिया सिंघवी बालोतरा- मुंबई
श्री उत्तमराजजी पारसकंवर सिंघवी, बिजयनगर
श्री सम्पतराजजी सपनकुमारजी गादिया, पाली बैंगलौर
श्री पुखराजजी हस्तीमलजी पालरेचा, मोकलसर-बैंगलोर
शा. घेवरचंदजी शंकरलालजी साकरिया, सांडेराव-बैंगलोर
श्री आनन्दकुमारजी कांतिलाल प्रकाशचन्दजी चौपड़ा, हालावाले बैंगलोर
श्री वरदीचंदजी पंकजकुमारजी महावीरकुमारजी बाफना, बैंगलोर
संघवी श्री पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा, मोकलसर- बैंगलोर
श्री राजेन्द्रकुमारजी तिलोककुमारजी बोथरा, बैंगलोर
श्री छगनलालजी शांतिलालजी लूणावत, शांतिनगर बैंगलोर
शा. सज्जनराजजी रतनचंदजी मुथा, बैंगलोर
श्री तेजराजजी मनोजकुमारजी आनन्दकुमारजी मालाणी, मोकलसर-बैंगलोर
शा. मूलचन्दजी किरण अरूण विक्रम पुत्र पौत्र मिश्रीमलजी भंसाली, सिवाना-बैंगलोर
श्री भंवरलालजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री पारसमलजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री जुगराजजी घेवरचंदजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री कन्हैयालालजी ओटमलजी छगनलालजी सुजाणी रांका, बैंगलोर
श्री गेनमलजी हरकचंदजी लूणिया, बैंगलोर
श्री मोटमलजी कानमलजी सदानी, बैंगलोर
संघवी शा. मांगीलालजी भरतमलजी, बैंगलोर
श्री पी. एच. साह, बैंगलोर
श्री विनोदकुमारजी पारख, बैंगलोर
श्री माणकचंदजी, गौतमचंदजी चौपड़ा, ब्यावर
श्री संजयकुमारजी, कनिष्ठकुमारजी बरडिया, ब्यावर
श्री ओमप्रकाशजी राजेशजी (ओमजी दवाईवाला), ब्यावर
श्री उगमराजजी सुरेशकुमारजी मेहता, ब्यावर
सेठ श्री शंभुमलजी बलवन्तजी यशवंतजी रांका, ब्यावर
श्री मदनलालजी दीपचंदजी कोठारी, ब्यावर
श्री कुशलचंदजी पारसकुमारजी सतीशकुमारजी मेड़तवाल, ब्यावर
श्री शांतिलालजी सज्जनराजजी कुशलराजजी ऋषभ तातेड़-गडवानी, ब्यावर
श्री कानसिंहजी मधुसूदन सुदर्शन संजय चौधरी कोठियां, भीलवाड़ा
श्री जीवनसिंहजी दीपककुमार राजेशकुमारजी लोढ़ा, गुरलां-भीलवाड़ा

श्री प्रेमसिंहजी राजेन्द्रकुमार नरेन्द्रकुमारजी बोहरा गुरलां-भीलवाड़ा
श्री भंवरलालजी बलवन्तसिंहजी मेहता, गुरलां-भीलवाड़ा
शा. भीकचंदजी धनराजजी देसाई, सिणधरी-मल्हारपेठ
संघवी श्री हंसराजजी रमेशजी सुरेशजी पुत्र श्री मोहनलालजी मूथा मांडवला
शा. मोहनलालजी किरण दिनेश प्रवीण पुत्र पौत्र शा. बस्तीमलजी, मांडवला
मूथा शा. नेनमलजी पन्नालालजी सोनवाड़िया, मांडवला
श्री पारसमलजी भानमलजी छाजेड़, मांडवला-मुम्बई
श्रीमती पुष्पाजी ए., केतनजी चेतनजी जैन पाली-मुम्बई
श्री मोतीलालजी ओसवाल, पादरू-मुम्बई
श्री अतुलजी हनवंतचन्दजी भंसाली, जोधपुर-मुम्बई
श्री महेन्द्रकुमारजी शेषमलजी दयालपुरा वाले, मुम्बई
श्री कन्हैयालालजी भगवानदासजी डोसी-मुम्बई
श्री रिखबचन्दजी जैन, मुम्बई
शा. अनिल रणजीतसिंहजी पारख, जोधपुर-मुंबई
श्रीमती टीपूदेवी कालुचंदजी, बदामीदेवी अरविंदजी श्रीश्रीश्रीमाल सांचौर-मुंबई
शा. भंवरलालजी कमलचन्द रिषभ गुलेच्छा, मुम्बई
श्री बाबुलालजी सुमेरमलजी, मुंबई
श्रीमती सुआदेवी उदयचंदजी नाथाजी, जीवाणा-मुंबई
श्री जितेन्द्र केशरीमलजी सिंघवी, मुंबई
श्री रमेश सागरमलजी सियाल, मुंबई
श्री गौतमचंद डी. भंसाली, मुंबई
शा. सागरमलजी फूलचंदजी सियाल, मुंबई
श्रीमती मथरीदेवी शांतिलालजी वाघेला, सांचौर-मुंबई
श्री मोहनलालजी केवलचंदजी छाजेड़, डुठारिया-मुंबई
श्री चतुर्भुजजी विजयराजजी श्रीश्रीमाल, फालना-मुंबई
श्री भंवरलालजी विरदीचन्दजी छाजेड़, हरसाणी-मुंबई
श्री वंसराजजी मिश्रीमलजी पालरेचा भरतवाला, मोकलसर
श्री मीठालालजी अमीचंदजी पालरेचा भरतवाला, मोकलसर
श्री किस्तुरचन्दजी छगनलालजी चौपड़ा, रतलाम
श्री मदनलालजी रायचन्दजी शंखलेशा, रामा-कल्याण
श्री अनूपचन्दजी अनिल अशोक अजय कोठारी, रायपुर
श्री नेमीचन्दजी श्यामसुन्दरजी बेदमुथा, रायपुर
श्री उमेशकुमारजी मुकेशकुमारजी तातेड़, रायपुर
स्व. हस्तीमलजी छोगाजी हिरोणी, रेवतडा-चेन्नई
श्री नथमलजी भंवरलालजी सौ. किरणदेवी पारख, लोहावट
श्रीमती शांताबेन हरकचन्दजी बोथरा, सांचौर
श्री कानूगो प्रकाशमलजी छगनलालजी बोथरा, सांचौर
श्री मूलचंदजी मिश्रीमलजी बुर्ड, सांचौर-मुम्बई
श्री धुडचंदजी रतीलालजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर-मुम्बई
श्री रावतमल सुखरामदास कमलेश विमल धारीवाल चौहटन-सांचौर
श्री मिश्रीमलजी चन्दाजी मरड़िया, सांचौर
स्व. दाड़मीदेवी श्री पुखराजजी बोथरा, सांचौर
श्री हरकचन्दजी सेवन्तीजी जितेन्द्र विनोद राजेश शाह, सांचौर
शा. प्रकाशंचद पारसमलजी छाजेड़, सांचौर
श्री सुमेरमलजी पुखराजजी बोथरा, सांचौर-हैदराबाद
श्री दिलीपकुमारजी जांवतराजजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर- मुंबई
श्री जुगराजजी रमेशजी उत्तमजी महेन्द्रजी छाजेड़ सिवाना- मदुराई
श्रीमती सुखीदेवी श्री भीमराजजी बादरमलजी छाजेड़, सिवाना-पूना
श्री पारसमलजी चंपालालजी छाजेड़, सिवाना-हैदराबाद
श्री प्रकाशकुमार अंकितकुमारजी जीरावला, सूरत
श्री इन्द्रचन्दजी गौतमचन्दजी चौपड़ा, बिलाड़ा-हैदराबाद
श्री माणकचंदजी छाजेड़, सिवाना-हैदराबाद
श्री बाबूलालजी मालू-सूरत
श्री प्रेमचंदजी गेमरमलजी छाजेड़-बाड़मेर-सूरत
शा. पारसमलजी शेरमलजी गोठी, डांगरीवाला-सूरत
श्री मोहनलालजी हरखचंदजी गुलेच्छा, विजयवाड़ा
श्रीमती जतनदेवी सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, हावड़ा
श्री भीकमचन्दजी बाबूलालजी तोगमलजी गोलेछा, पादरू-हैदराबाद
श्री रतनचंदजी प्रकाशचंदजी चौपड़ा, बिलाडा-हैदराबाद
श्री रतनचंदजी उत्तमचंदजी चौपड़ा, हैदराबाद
श्री गौतमचन्दजी मीनादेवी सौरभ, सुलभ कोठारी,रायपुर (छ.ग.)
श्रीमती सुरजदेवी गुलाबचन्दजी मुणोत, रायपुर (छ.ग.)
श्री भूरमलजी नवलखा राजनांद गांव (छ.ग.)
श्री संजयजी सिंघी, राजनांद गांव (छ.ग.)
श्री हस्तीमलजी अभिषेक कुमार धारीवाल, बाड़मेर
-श्री जसराज राणुलालजी कोचर, अक्कलकुआ
-श्री मेघराजजी तेजमलजी ललवानी, अक्कलकुआ
-श्री पुण्यपालजी अनिलजी सुनीलजी सुराणा, इन्दौर
-श्री गेंदमल पुखराजजी चौपड़ा, उज्जैन
-श्री रतनचन्द जयकुमार जिनेन्द्रकुमार चौपड़ा, उज्जैन
-श्री पारसमलजी वी. जैन, सांचौर-बडोदरा
-श्री धवलचन्दजी छगनलालजी बोथरा, सांचौर
-श्री पारसमलजी हंजारीमलजी बोहरा, सांचौर
-श्री चुन्नीलालजी मफतलालजी मरड़िया, सांचौर-सूरत
-श्री गौतमचन्दजी राजमलजी डूंगरवाल, देवड़ा-सूरत
-श्री मांगीलालजी आसुलालजी मालू, बाड़मेर-सूरत
-शा. जुगराजजी मिश्रीमलजी तलावट, उम्मेदाबाद-सेलम
-श्री कन्हैयालालजी मुकेशकुमारजी, सोमपुरा, लुणावा

पंचायती मंदिर में प्रतिष्ठा संपन्न

श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ जयपुर द्वारा संचालित श्री सुपार्श्वनाथ पंचायती मंदिर में चक्रेश्वरी देवी की प्रतिष्ठा वैशाख सुदि 5 शुक्रवार ता. 20 अप्रैल 2018 को पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में संपन्न हुई।

प्रतिष्ठा का लाभ सिंघी त्रिलोकचंदजी प्रेमचंदजी कवीन्द्रजी ताराचंदजी परिवार ने लिया।

बाड़मेर से हस्तिनापुर यात्रा संघ

बाड़मेर निवासी संघवी श्री मांगीलालजी आसुलालजी मालू परिवार की ओर से उनकी धर्मपत्नी सौ. विमलादेवी के वर्षीतप पारणे के उपलक्ष्य में बाडमेर से हस्तिनापुर व चार दादा धाम के यात्रा संघ का भव्य आयोजन किया गया।

बाडमेर के सवासौ से अधिक वर्षीतप के तपस्वियों व 500 यात्री आराधकों का यह संघ बाडमेर से हस्तिनापुर पहुँचा। हस्तिनापुर में समस्त पारणों व स्वामिवात्सल्य का लाभ मालू परिवार द्वारा किया गया।

पारणे की संपन्नता के पश्चात् महरौली होते हुए पूज्य गच्छाधिपति के दर्शन करने जयपुर पहुँचा। जयपुर से मालपुरा, अजमेर, बिलाड़ा यात्रा करके संघ बाडमेर पहुँचा।

कुशलवाटिका, पाल–सूरत में जाजम का मुहूर्त्त संपन्न

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के निश्रावर्ति पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. एवं पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. की शुभ निश्रा में सुरत के श्री कुशलवाटिका जैन संघ, पाल–सूरत के तत्त्वावधान में नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनालय एवं दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी के अंजनशलाका–प्रतिष्ठा महोत्सव निमित्त जाजम के चढावें दि. 22.04.2018 को भव्य रूप से संपन्न हुए। जिनमें सभी भक्तों ने उल्लासपूर्वक भाग लिया।

जिनमंदिर निर्माण के मुख्य लाभार्थी श्रीमती खम्मादेवी वनेचंदजी मण्डोवरा परिवार सिणधरी एवं दादावाडी निर्माण लाभार्थी श्रीमती तारादेवी भंवरलालजी मरडिया परिवार डंडाली निवासी ने जाजम के चढावों में अनेक विशिष्ट लाभ लेकर अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग किया।

जाजम के चढावों से पूर्व परमात्मा के नूतन बिंब एवं दादा गुरुदेव के नयनाभिराम बिंब के साथ पूज्य गुरु भगवंतों का सामैयायुक्त प्रवेश करवाया गया। पूरे दिन स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया।

मुक्तक

तैरना सीखना है तो पानी में गोता लगाना ही पडेगा।
भूख मिटाना है तो खाना खाना ही पडेगा।
दृढ़ता से भरा पुरुषार्थ ही नियमित बनाता है,
मुक्ति पाना है तो साधना में मन रमाना ही पडेगा।।

- आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जटाशंकर बहुत परेशान था। उसका काम धन्धा नहीं चल रहा था। दुकान थी। पर आय नहीं थी। आखिर वह ज्योतिषी घटाशंकर के पास अपनी कुण्डली लेकर पहुँचा।

घटाशंकर ने उसकी कुण्डली देख कर कहा– मैं समझ गया कि तुम्हारी दुकान क्यों नहीं चल रही है?असल में तुम्हारी दुकान पर किसी ने तंत्र विद्या की है। जादू टोना करके तुम्हारी दुकान को बांध दिया है।

जटाशंकर ने कहा– मुझे भी ऐसा ही लगता है। मेरे व्यापार को किसी ने बांध दिया है। पंडितजी, आप कोई उपाय बताओ।

घटाशंकर ने कहा– मैं कहूं, वैसा करो। दुकान का सारा बंधन समाप्त हो जायेगा। बाद में किसी की नजर भी नहीं लगेगी।

जटाशंकर ने कहा– मुझे क्या करना होगा?

घटाशंकर ने कहा– बाजार जाओ! एक नींबू और एक मिर्च ले आओ। अपनी दुकान पर बांध देना। सारे दोष समाप्त हो जायेंगे।

यह सुनकर जटाशंकर जोर जोर से हँसने लगा।

घटाशंकर ने क्रोध में आकर कहा– इसमें हँसने की क्या बात है! क्या मैंने कोई गलत बात कह दी है, जो तुम इतना जोर जोर से हँसते हो! यदि तुम्हें जादू टोने का असर समाप्त करवाना है तो यह करना ही पडेगा।

जटाशंकर ने कहा– हुजूर! मेरे हँसने का कारण वह नहीं है, जो आप सोच रहे हो। मेरे हँसने का कारण यह है कि आपने नींबू मिर्ची दुकान पर बांधने का कहा है। पर मेरी तो दुकान ही नींबू मिर्ची की है। दुकान में जब इतने नींबू मिर्ची पडे हैं तो जादू टोने का असर कैसे हो सकता है?

हकीकत जान कर घटाशंकर झेंप गया। उत्तर देते न बना।

संसार पुण्य पाप के आधार पर चलता है। धन प्राप्ति पुण्य का परिणाम है। पुण्याई जागृत हो तो अल्प प्रयत्न में अत्यधिक प्राप्ति हो जाती है। पुण्य के अभाव में अति प्रयत्न भी निष्फल हो जाते हैं। कर्म राज का यह रहस्य समझ कर हमें अंध विश्वासों से बचना चाहिये।

चातुर्मास घोषणा

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने जयपुर में पूर्व में घोषित चातुर्मास-स्थल का स्थानीय श्री संघ की सहमति से परिवर्तन करते हुए पूज्य मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म. ठाणा 4 का चातुर्मास जो पूर्व में बालोतरा में घोषित किया गया था, उसे बाडमेर घोषित किया।

बाडमेर जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ की लगातार चल रही विनंती को स्वीकार तो पूर्व में ही कर लिया था। नाम की घोषणा बाकी थी। यह घोषणा 19 अप्रेल को जयपुर में की।

साथ ही पूज्य बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास बालोतरा में घोषित किया गया।

पूज्यश्री की आज्ञा से इस प्रकार चातुर्मास और घोषित किये गये –

पूज्य मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा- कैवल्यधाम

पूज्य साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. आदि ठाणा 3- कोयम्बतूर

पूज्य साध्वी श्री प्रियदर्शिताश्रीजी म. आदि ठाणा 2- सेलम

पूज्य साध्वी श्री राजेशश्रीजी म. आदि ठाणा 6- केशकाल

पूज्य साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म. आदि ठाणा 4- नगरी

पूज्य साध्वी श्री मृगावतीश्रीजी म. आदि ठाणा 3- बडौदा

	श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः	
	श्री वासुपूज्यस्वामिने नमः	
	श्री महावीरस्वामिने नमः	
अनंतलब्धि निधानाय गुरूगौतमस्वामिने नमः
खरतरविरूदधारक आचार्य श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः
दादागुरूदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्र सद्गुरूभ्यो नमः
पूज्य गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरूभ्यो नमः
मंगलवाड़ चौराहा मध्ये नूतन जिनालय की पावन धरा पर
प्रतिष्ठा महोत्सव में सकल संघ को भावभरा आमंत्रण
प्रतिष्ठाचार्य एवं पावन निश्रा
गच्छाधिपति प.पू. आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
भव्यातिभव्य
प्रतिष्ठा महोत्सव
समारोह प्रारंभ
प्रथम ज्येष्ठ वदि 11
शुक्रवार, दि. 11 मई 2018
भव्य शोभायात्रा
प्रथम ज्येष्ठ वदि 12
शनिवार, दि. 12 मई 2018
प्रतिष्ठा
प्रथम ज्येष्ठ वदि 13
रविवार, दि. 13 मई 2018
द्वार उद्घाटन
प्रथम ज्येष्ठ वदि 14
सोमवार, दि. 14 मई 2018
महोत्सव स्थल
श्री वासुपूज्य जिन मंदिर, मंगलवाड़ चौराहा, जिला-चित्तौड़गढ़ (राज.)
निमंत्रक
बाबूलाल बोहरा – अध्यक्ष 09867156699
सर कीकाभाई प्रेमचन्द रेस्ट हाऊस ट्रस्ट, ऋषभदेव
प्रतिष्ठा सहयोगी
श्री महावीर आध्यात्मिक जैन पारमार्थिक ट्रस्ट, मंगलवाड़
सम्पर्क सूत्र : 09829846104, 09413641053, 09413965805, 09414166391, 09413965361
E-mail : gajmandir09@gmail.com, smajpt1008@gmail.com

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

॥ दादागुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिभ्यो नमः ॥ ॥ श्री मुनिसुव्रत स्वामिने नमः ॥ ॥ श्री नाकोड़ा भैरवाय नमः ॥
॥ श्री अनंतलब्धिनिधाय गुरु गौतमस्वामीने नमः ॥
॥ श्री खरतरविरुदधारक श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः ॥
॥ दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ॥
॥ पू.गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः ॥

श्री सूरत नगर की धन्य धरा पर
श्री कुशलवाटिका जैन संघ (पाल) मध्ये
श्री मुनिसुव्रतस्वामि जिनालय एवं
दादा श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी के
अंजन शलाका-प्रतिष्ठा

पावन निश्रा
पू. गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति
आचार्य श्री जिनमणिप्रभ
सूरीश्वरजी आदि
पू. उपाध्याय
श्री मनोज्ञसागरजी म.
आदि

महोत्सव प्रसंगे

भाव भरा हार्दिक

आमंत्रण

प्रतिष्ठा दिवस
द्वितीय ज्येष्ठ सुदि 3
शनिवार
दि. 16.06.2018

शुभ स्थल
श्री कुशल वाटिका
पाल-हजीरा रोड़
New R.T.O. के सामने का रोड़,
पाल-सूरत (गुजरात)

निमंत्रक
श्री कुशलवाटिका जैन संघ
श्री जिनकुशलसूरि खरतरगच्छ जैन ट्रस्ट

मन्दिर लाभार्थी - श्रीमती खम्मादेवी वनेचन्दजी मण्डोवरा, सिणधरी
दादावाडी लाभार्थी - श्रीमती तारादेवी भंवरलालजी मरडीया, जोधपुर
सम्पर्क सूत्र : रीखबचन्द थानमलजी मुणोत 8320861896, 9825203444
सुरेश कुमार देवीचन्दजी लूणिया 7984504538, 9428743981, मांगीलालजी लिखमीचंदजी श्रीश्रीमाल 8005622275

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408